कलीसिया का इतिहास
तथा
अन्य प्रवचन

लेखक
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली-110049

प्रथम संस्करण 2001

मुद्रक:
प्रिन्ट इंडिया
ए-38/2, मायापुरी फेज़-1
नई दिल्ली-110064।

विषय-सूची

		पृष्ठ
1.	कलीसिया का इतिहास	1
2.	एक ही कलीसिया और एक ही शिक्षा	6
3.	परमेश्वर का वही अर्थ होता है जो वह कहता है	11
4.	अनुग्रह और उद्धार	17
5.	आत्मिक सुरक्षा	22
6.	आपने कहां से सीखा है?	27
7.	परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा!	32
8.	बाइबल की मूल शिक्षाएं	37
9.	जिन बातों से परमेश्वर घृणा करता है	42
10.	अपने कामों से नहीं, पर आज्ञा मानने के द्वारा	47
11.	जीवन की कुछ महत्वपूर्ण सच्चाईयां	52
12.	निर्णय करने का समय अभी है	56

कलीसिया का इतिहास

आज अपने पाठ में हम कलीसिया अर्थात् चर्च के इतिहास के बारे में संक्षिप्त रूप से देखेंगे। चर्च, अर्थात् कलीसिया एक बाइबल का विषय है। बाइबल से हम सीखते हैं, कि कलीसिया की स्थापना स्वयं प्रभु यीशु मसीह ने की थी। (मत्ती 16:18)। कलीसिया का संचालक या मुखिया अर्थात् सिर स्वयं यीशु मसीह है। (कुलु. 1:18)। वास्तव में, कलीसिया या चर्च का तात्पर्य किसी भवन या मन्दिर या घर से नहीं है, जिसे लोग ईंटों और पत्थरों से अपने हाथों से बनाते हैं। किन्तु, बाइबल में जिस कलीसिया के बारे में हम पढ़ते हैं उसका अर्थ है उन लोगों की एक मन्डली, या एक जमायत, या एक झुंड जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह में यह विश्वास किया है कि वह परमेश्वर का पुत्र है, और वह स्वर्ग से पृथ्वी पर आया था, और उसने अपना ही बलिदान देकर सारे जगत के पापों का प्रायश्चित किया था। उन लोगों ने प्रत्येक बुराई से अपना मन फिराकर, पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा लिया है। (मत्ती 28:18-20; प्रेरितों 2:37-47)। वे केवल मसीही, अर्थात् मसीह के अनुयायी हैं।

कलीसिया को आरम्भ में क्योंकि मसीह ने स्वयं बनाया था, और क्योंकि मसीह ने यह कहा था, जैसा कि बाइबल में मत्ती 16:18 में हम पढ़ते हैं, कि "मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।" इसलिये आरम्भ में केवल एक ही कलीसिया थी और उसे मसीह की कलीसिया कहा जाता था। और इसी तरह से, मसीह की कलीसिया की अनेकों मंडलियों को "मसीह की कलीसियाएं" कहा

जाता था, जैसा कि बाइबल में रोमियों 16:16 में हम पढ़ते हैं।

आरम्भ में, जब मसीह ने अपनी कलीसिया को यरूशलेम में बनाया था तो उस समय कलीसिया में केवल वही लोग थे जो यहूदी मत से आए थे। लेकिन बाद में जब मसीह का सुसमाचार अन्य लोगों ने भी सुना था तो वे भी सुसमाचार को मानकर मसीह की कलीसिया में शामिल हो गए थे। उस समय उन लोगों पर रोम का राज था। और जब मसीह की कलीसिया दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी थी, तो रोमियों ने कलीसिया का कड़ा विरोध किया था। पर बाद में, आनेवाले वर्षों में, स्वयं बहुत से रोमी लोगों ने भी मसीहीयत को स्वीकार कर लिया था, और अनेको रोमी लोग मसीह के अनुयायी बन गए थे, और उसकी कलीसिया में शामिल हो गए थे। और जैसे-जैसे समय बीतता गया, सारे रोमी राज्य में मसीह की कलीसिया बढ़ती चली गई। पर कुछ ही समय में कलीसिया को एक नया नाम देकर उसे रोम के साथ जोड़ दिया गया – और इस प्रकार रोम की कलीसिया, अर्थात् रोमन कैथलिक कलीसिया का आरम्भ हुआ था। पर न केवल कलीसिया को एक नया नाम ही दिया गया था, पर आनेवाले वर्षों के भीतर कलीसिया में ऐसी-ऐसी शिक्षाओं को भी अपनाया जाने लगा था, जिनका वर्णन बाइबल में कहीं नहीं मिलता। जैसे कि छोटे बच्चों को बपतिस्मा देना; बपतिस्मा लेनेवालों को जल में गाड़कर बपतिस्मा देने के बजाय उन पर पानी का छिड़काव करना; "पवित्र जल" का उपयोग करना; और ऐसी ही अन्य दर्जनों शिक्षाओं को कलीसिया में सिखाया जाने लगा। ऐसा करने से न केवल मसीह की कलीसिया का स्वरूप ही बदल गया, पर एक नई कलीसिया का आरम्भ हो गया। और यह सिलसिला लगभग एक हज़ार वर्षों तक चलता रहा। और इस दौरान रोमन कैथलिक कलीसिया इतनी शक्तिशाली हो गई थी, कि मसीह की कलीसिया को लोग लगभग भूल ही बैठे।

किन्तु, तभी पन्द्रहवीं सदी में कुछ लोग, जिनका सम्बन्ध रोमन कैथलिक कलीसिया से था, और जो कलीसिया में याजक और शिक्षा देने का काम करते थे, इस बात की ओर जागरुक हो उठे कि वे बाइबल और उसकी शिक्षाओं से कितने दूर जा चुके थे। वास्तव में यह वह समय था, जबकि लोगों को बाइबल अपने पास रखना और पढ़ना सख्त मना था। सो लोग स्वयं तो वास्तव में जानते ही नहीं थे कि बाइबल में क्या लिखा है। वे केवल वही करते और मानते थे जो उन्हें याजक, अर्थात् "प्रीस्ट" या "फ़ादर" लोग बताया करते थे। सो उनमें से कुछ याजकों ने, जिनमें मार्टिन लूथर का नाम प्रमुख था, कलीसिया का विरोध करना आरम्भ कर दिया। इसलिये उन्हें रोमन कैथलिक कलीसिया से बाहर निकाल दिया गया, और उन्हें "विरोधी" अर्थात् "प्रोटेस्टैन्ट" कहा जाने लगा।

और इस प्रकार पन्द्रहवीं सदी से ही अनन्य साम्प्रदायिक कलीसियाओं का आरम्भ होने लगा। क्योंकि जैसे कुछ लोग मार्टिन लूथर के पीछे हो लिये और इस प्रकार वे "लूथरन" कहलाने लगे थे। ऐसे ही कुछ अन्य लोग मार्टिन लूथर जैसे दूसरे अगुओं के पीछे हो लिये थे जिन्होंने अपनी-अपनी कलीसियाओं के नाम या तो किसी विधी-विशेष के ऊपर रख दिए, जैसे "मेथोडिस्ट" या किसी शिक्षा के ऊपर रख दिए जैसे "बैपटिस्ट" या किसी दिन के ऊपर रख दिये जैसे "पेन्टेकोस्टल।" और आज, परिस्थिति यह है, कि आज पृथ्वी पर लगभग एक हज़ार प्रकार की अलग-अलग कलीसियाएं हैं। इन कलीसियाओं के न केवल नाम ही अलग-अलग हैं पर इनकी शिक्षाएं और विश्वास भी अलग-अलग हैं। हां, ये सब एक ही बाइबल को मानने का दावा तो करती हैं, पर फिर भी बाइबल की शिक्षाओं को अलग-अलग ढ़ग से मानती और सिखाती हैं। और क्योंकि लगभग सभी साम्प्रदायिक कलीसियाएं रोमन कैथलिक कलीसिया के भीतर से ही निकली हैं, इसलिये उन

सभी में कहीं न कहीं उन शिक्षाओं को देखा जा सकता है जिन्हें रोमन कैथलिक कलीसिया में सिखाया जाता था।

किन्तु, आज से लगभग 2000 वर्ष पूर्व प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थुस में कलीसिया के नाम एक पत्र लिखा था, जिसे बाइबल में आज हम पहले कुरिन्थियों की पत्री के नाम से जानते हैं। इस पत्री के पहले अध्याय की 10 से 13 आयतों में प्रेरित ने लिखकर इस प्रकार कहा था: "हे भाइयो, मैं तुमसे यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो। क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे बारे में बताया है कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आप को पौलुस का, कोई अपुल्लोस का, कोई कैफा का, कोई मसीह का कहता है। क्या मसीह बट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला?"

अब, क्या कहा था पौलुस प्रेरित ने उन से? प्रेरित ने उन से कहा था, कि तुम सब लोग एक ही बात कहो। अर्थात् जब सब लोग एक ही बात कहेंगे, तो उन सब में एकता होगी। पर उन में एकता क्यों नहीं थी? उन में एकता इसलिये नहीं थी, क्योंकि वे सब टोलियां बनाकर अपने आप को अलग-अलग नामों से कहला रहे थे। और आज भी ठीक यही बात है। क्यों आज पृथ्वी पर अलग-अलग नामों की और अलग-अलग शिक्षाओं की कलीसियाएं हैं? इसलिये, क्योंकि वे सब एक ही बात नहीं कहते। और वे एक बात इसलिये नही कहते, क्योंकि वे एक बात, अर्थात् जो बाइबल के नए नियम में लिखी है, उसे नहीं सुनते। एक समय था, जैसा कि अभी हम ने देखा था, जबकि लोगों को अपने पास बाइबल रखने को और पढ़ने को मना किया गया था। वह समय "अन्धकार

का समय'' था – क्योंकि परमेश्वर के वचन की ज्योति से लोग अपरिचित थे। लेकिन आज जबकि लोग स्वयं परमेश्वर के वचन की पुस्तक को पढ़कर, और सच्चाई को जानकर उस पर चल सकते हैं, फिर भी अधिकतर लोग परमेश्वर के वचन की शिक्षा से अपरिचित हैं। क्योंकि लोग स्वयं तो पढ़ते नहीं हैं, पर अपने धर्म-गुरुओं, पास्टरों और अपनी कलीसियाओं की बातें सुनकर उन्हीं को मानते हैं। लेकिन प्रभु यीशु ने कहा था, जैसा कि हम यूहन्ना 8:32 में पढ़ते हैं, कि जब तुम सत्य को जानोगे तो सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। और आज मैंने आपको परमेश्वर के वचन की यह सच्चाई बताई है, कि मसीह ने आरम्भ में अपनी केवल एक ही कलीसिया को बनाया था। और उसने मनुष्यों को अलग-अलग नामों की कलीसियाओं को बनाने का अधिकार नहीं दिया है। उसकी आज भी केवल एक ही कलीसिया है। और सब लोग जो उसमें विश्वास लाते हैं और उसकी आज्ञा को मानकर उद्धार पाते हैं, उन सब को वह आज भी अपनी उसी कलीसिया में मिलाता है; जो उसी के नाम से कहलाती है; और उसी के अधिकार से चलती है। क्या आप मसीह की कलीसिया के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं? यदि हां, तो हमें अवश्य लिखिए।

एक ही कलीसिया और एक ही शिक्षा

प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस के ऊपर अपना बलिदान देने से कुछ ही समय पूर्व अपने चेलों से प्रतिज्ञा करके कहा था कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। प्रत्यक्ष ही है, यदि मसीह ने कहा था, जैसे की मत्ती 16:18 में हम पढ़ते हैं, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा, तो कलीसिया कोई मामूली चीज़ नहीं हो सकती। बल्कि बाइबल में तो यह भी लिखा है, जैसे कि हम प्रेरितों 20:28 में पढ़ते हैं, कि मसीह ने अपनी कलीसिया के लिये अपना खून बहाया था। और इफिसियों 1:22, 23 में लिखा है कि कलीसिया मसीह की देह है। और कुलुस्सियों 1:18 में हम पढ़ते हैं कि मसीह कलीसिया का सिर है। सो इस तरह से हम देखते हैं, कि बाइबल में कलीसिया को एक बड़ा ही खास स्थान दिया गया है। परन्तु कलीसिया क्या है?

कलीसिया शब्द यूनानी भाषा का है, और यूनानी भाषा में कलीसिया का अर्थ है एक मंडली; यानि लोगों का एक झुंड, एक जमायत। अंग्रेज़ी में यूनानी भाषा के शब्द कलीसिया को चर्च कहा गया है। अकसर लोग यह गलती करते हैं; कि वे किसी बिल्डिन्ग, या भवन या इमारत को "चर्च" कहते हैं। पर चर्च या कलीसिया का वास्तविक अर्थ है "लोगों का झुन्ड।" यानि जब प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा, तो प्रभु के कहने का अभिप्राय इस बात से था, कि वह अपनी एक मंडली या अपने लोगों का एक झुन्ड बनाएगा। वे लोग उसके विशेष लोग

होंगे; वे उसके नाम से कहलाएंगे, और वे उसकी शिक्षाओं का और उसके आदर्शों का पालन करेंगे।

और जब प्रभु ने अपनी उस मंडली अर्थात् अपनी कलीसिया को बनाया था, तो सबसे पहले उसमें उसके वे बारह चेले थे जिन्हें उसने आरम्भ में चुना था। और उन्हीं प्रथम चेलों ने जब उसके सुसमाचार को अन्य लोगों को सुनाना आरम्भ किया था, तो सबसे पहली बार लगभग तीन हज़ार लोगों ने मसीह के सुसमाचार को सुनकर; अर्थात् यह सुनकर की मसीह जगत के पापों का प्रायश्चित करने को मारा गया था, और गाड़ा गया था, और फिर तीन दिन के बाद जी उठा था, मसीह में विश्वास किया था। और जब उन विश्वासियों ने यीशु के चेलों से पूछा था कि अब हम क्या करें? तो उन्होंने उन लोगों को जवाब देकर कहा था, जैसा कि हम प्रेरितों 2:38 में पढ़ते हैं, कि तुम में से हर एक अपना-अपना मन फिराए और अपने-अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्रात्मा का दान अर्थात् उद्धार पाओगे। और बाइबल में आगे लिखा है, कि जब उन लोगों ने ऐसा किया था, अर्थात् अपना मन फिराकर अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया था, तो मसीह ने उनके पापों को क्षमा करके उन सब को अपनी कलीसिया में, अर्थात् अपने अनुयायीयों की मन्डली में मिला लिया था। और ऐसे ही, प्रतिदिन जब लोग मसीह के सुसमाचार को सुनकर उसमे विश्वास लाते थे, और अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा पाने के लिये जल मे गाड़े जाकर बपतिस्मा लेते थे, तो मसीह उन सब को अपनी कलीसिया में मिला लेता था।

वह कलीसिया, अर्थात् जिस की स्थापना स्वयं मसीह ने आरम्भ में की थी, यानि मसीह की कलीसिया, आज भी वैसे की वर्तमान है। और आज भी वह केवल उसी के नाम से कहलाती

है, और उसी शिक्षा का पालन करती है जो आरम्भ में मसीह ने और उसके प्रेरितों ने दी थी।

मसीह ने अपनी कलीसिया की स्थापना आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व की थी। और उस कलीसिया के बारे में हम आज भी बाइबल के नए नियम में पढ़ते हैं। और इसी के आधार पर, अर्थात्, बाइबल के नए नियम में लिखी बातों के आधार पर हम आज भी मसीह की सच्ची कलीसिया को पहचान सकते हैं।

पर इन दो हज़ार सालों के दौरान सैकड़ों अलग-अलग किस्म की और अलग-अलग नामों से कहलाई जानेवाली कलीसियाओं का आरम्भ भी सारे संसार में हुआ है। और वे इतनी अधिक सारे देशों में फैल गईं हैं कि आज लोग अधिकांश रूप से मसीह की कलीसिया को तो लगभग भूल ही बैठे हैं, पर उन्हें विभिन्न प्रकार के नामों से कहलाई जानेवाली सभी कलीसियाएं ही सही लगती हैं। और जब इस बात की चर्चा होती है तो अकसर लोग कहते हैं, कि नाम से क्या फ़र्क पड़ता है? पर यदि यह सच है, तो फिर जो नाम हमारे राशन कार्ड पर लिखे हैं, या जो नाम हमारे प्रमाण पत्रों पर और जायदाद के कागज़ों पर लिखे हैं, तो उनका क्या महत्व है? बैंक से या डाकघर से जब हम अपने खाते से रुपए निकालते हैं तो अपने हस्ताक्षर करने के बजाए किसी का भी नाम लिख दें! क्या ऐसा हो सकता है? अभी कुछ समय से हम देख रहे हैं, कि हमारे देश में कुछ ऐसे लोग हैं जो पांच-पांच सौ रुपए के नकली नोटों को देश भर में फैला रहे हैं। अब ये नकली नोट बिल्कुल वैसे ही लगते हैं जैसे की असली नोट हैं। और हज़ारों और लाखों लोग धोखे में आकर उन्हें ले भी लेते हैं। पर वे नकली नोट फिर भी नकली ही रहते हैं। और सरकार रेडियो और टेलेविज़न और समाचार पत्रों के माध्यम से बार-बार लोगों को सावधान कर रही है; और लोगों को बताया जा रहा है कि किस तरह से वे

असली और नकली नोटों के बीच अन्तर देख सकते हैं।

ऐसे ही बाइबल में भी हमें बताया गया है, कि जिस कलीसिया को आरम्भ में मसीह ने बनाया था, उसे हम किस प्रकार से पहचान सकते हैं। बाइबल से हम सीखते हैं, कि मसीह स्वयं अपनी कलीसिया का सिर है, और कलीसिया उसकी आत्मिक देह है, और उसकी कलीसिया में उसके सभी अनुयायी आपस में भाई और बहन हैं। वे व्यक्तिगत रूप से मसीही अर्थात् मसीह के अनुयायी, और सामूहिक रूप से मसीह की कलीसिया कहलाते हैं। वे हर एक सप्ताह के पहले दिन यानि रविवार के दिन, जिस दिन मसीह मुर्दों में से जी उठा था, अलग-अलग स्थानों पर, एकत्रित होते हैं और मसीह की शिक्षानुसार प्रभु-भोज में भाग लेकर उसके महाबलिदान को स्मरण करते हैं और उसकी आराधना करते हैं। वे प्रतिदिन उसके आदर्शों का पालन करके अपना जीवन निर्वाह करने का प्रयत्न करते हैं। इसलिये, वे किसी भी प्रकार का कोई गन्दा काम नहीं करते । वे किसी भी तरह का कोई नशा नहीं करते। वे लोगों से लड़ते-झगड़ते नहीं हैं, और गाली-गलौच नहीं करते। क्योंकि उनके जीवन का उद्देश्य स्वर्ग में प्रवेश करना है। वे मसीही, अर्थात् मसीह की कलीसिया के लोग केवल उन्हीं बातों को मानते हैं जिनके विषय में प्रभु यीशु मसीह के नए नियम में सिखाया गया है। इसलिये वे, मनुष्यों की बनाई शिक्षाओं को, और मनुष्यों के ठहराए दिनों और त्योहारों को नहीं मानते। वे इस बात को बड़ी ही गम्भीरता से लेते हैं, जैसा की मसीह ने सिखाया था, कि हर एक वह जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, पर केवल वही प्रवेश करेंगे जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलते हैं। (मत्ती 7:21)।

मित्रो, हम सब का केवल एक ही परमेश्वर अर्थात् स्वर्गीय पिता है। उस परमेश्वर पिता की हम सब के लिये एक ही इच्छा

है, और अपनी उस इच्छा को उसने सारी मानवता के लिये अपनी पुस्तक बाइबल में प्रकट किया है। उसने सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित करने के लिये केवल एक ही बलिदान दिया है। उसने अपने सामर्थी वचन को एक मनुष्य बनाकर यीशु मसीह के रूप में इस पृथ्वी पर भेजा था। वही आज हम सब का उद्धारकर्त्ता और मुक्तिदाता है। प्रत्येक स्थान पर जब लोग उसमें विश्वास करके उसकी आज्ञा को मानते हैं, तो वह उन सब को अपनी एक ही कलीसिया में, यानि उद्धार पाए हुए अपने लोगों के झुन्ड में मिलाता है।

हमारा कर्त्तव्य यह है, कि हम परमेश्वर की इच्छा को जानें और उसी की इच्छा पर चलकर अपने जीवनों को पृथ्वी पर व्यतीत करें। अपनी पुस्तक बाइबल में परमेश्वर ने अपनी इच्छा को हमें बताया है। और हमें उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई काम नहीं करना चाहिए। क्योंकि, अन्त में, एक दिन, हमें उसी के न्यायासन के सामने खड़े होना पड़ेगा।

परमेश्वर का वही अर्थ होता है, जो वह कहता है

मित्रो, एक समय ऐसा भी था जब परमेश्वर अपनी इच्छा को स्वयं लोगों पर प्रकट किया करता था। उस समय परमेश्वर की इच्छा लोगों के पास लिखी हुई किताब में नहीं थी। उन लोगों के पास बाइबल नहीं थी, जैसे कि आज हमारे पास है। आज यदि हम किसी भी बात के बारे में परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहते हैं, तो हम बाइबल में से पढ़कर उसकी इच्छा को जान सकते हैं। जैसे, अगर हम जानना चाहें, कि परमेश्वर कौन है? इस जगत की उत्पत्ति कैसे हुई? मनुष्य इस पृथ्वी पर कहां से आया और वह कहां जा रहा है? मनुष्य को अपने पापों से मुक्ति पाने के लिये क्या करना चाहिए? स्वर्ग क्या है? नरक क्या है? और इसी तरह के अन्य प्रश्नों के उत्तर हम आज बाइबल में से पढ़कर जान सकते हैं। और आश्वस्त हो सकते हैं, कि जैसा बाइबल में लिखा है, वह बिल्कुल सच है, क्योंकि बाइबल को जिन लोगों ने लिखा था, उन्होंने परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा प्रत्येक बात को बाइबल में लिखा था। लेकिन इस से पहले, जब लोगों के पास बाइबल नहीं थी, जब परमेश्वर की इच्छा लिखित रूप में मनुष्य के पास नहीं थी। उस समय परमेश्वर कुछ विशेष लोगों पर अपनी इच्छा को प्रकट करके लोगों से सम्बन्ध रखता था। उन लोगों को, जिन पर या जिन के द्वारा परमेश्वर अपनी इच्छा को व्यक्त करता था, भविष्यवक्ता कहा जाता था।

और आज हम अपने पाठ में एक ऐसे ही भविष्यवक्ता के

बारे मे देखने जा रहे हैं। उस भविष्यवक्ता का नाम बिलाम था। और यह बात उस समय की है, जब परमेश्वर अपने एक चुने हुए दल अर्थात् इसराएल को ऐसे देश में ले जा रहा था जिसे उसे देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी। लेकिन मार्ग में ऐसे बहुत से देश और राज्य पड़ते थे, जो उन्हें आगे बढ़ने से रोकते थे, परन्तु क्योंकि परमेश्वर उनके साथ था, इसलिये वे सब देशों और राज्यों को पराजित करके आगे ही बढ़ते जा रहे थे। और उसी समय की बात है, जिसे हम बाइबल में गिनती की पुस्तक के 22वें अध्याय में इस प्रकार पढ़ते हैं, कि:

"तब इसराएलियों ने कूच करके यरीहो के पास यरदन नदी के पार मोआब के अराबा में डेरे खड़े किए। और सिप्पोर के पुत्र बालाक ने देखा, कि इसराएलीयों ने अमोरियों के साथ क्या-क्या किया है। इसलिये मोआब यह जानकर, कि इसराएली बहुत हैं, उन लोगों से अत्यन्त डर गया; यहां तक कि मोआब इसराएलियों के कारण अत्यन्त व्याकुल हुआ। तब मोआबियों ने मिद्यानी पुरनियों से कहा, कि अब वह दल हमारे चारों ओर के सब लोगों को ऐसा चट कर जाएगा, जिस तरह बैल खेत की हरी घास को चट कर जाता है। उस समय सिप्पोर का पुत्र बालाक मोआब का राजा था। सो उस ने पतोर नगर को, जो महानद के तट पर बोर के पुत्र बिलाम के जाति भाइयों की भूमि थी, वहां बिलाम के पास दूत भेजे, कि वे यह कहकर उसे बुला लाएं, कि एक दल मिसर से निकल आया है, और भूमि उन से ढक गई है, और अब वे मेरे सामने ही आकर बस गए हैं। इसलिये आ और उन लोगों को मेरी ओर से शाप दे, क्योंकि वे मुझ से अधिक बलवन्त हैं; तब सम्भव है कि हम उन पर जयवन्त हों, और हम सब इनको अपने देश से मारकर निकाल दें; क्योंकि यह तो मैं जानता हूं, कि जिस को तू आशीर्वाद देता है, वह धन्य होता है, और जिस को तू शाप

देता है, वह शापित होता है। तब मोआबी और मिद्यानी पुरनिए भावी कहने की दक्षिणा लेकर चले, और बिलाम के पास पहुंचकर उसे बालाक राजा की बातें कह सुनाईं। बिलाम ने उन से कहा, कि आज रात को यहां टिको, और जो बात यहोवा मुझ से कहेगा, उसी के अनुसार मैं तुम को जवाब दूंगा। तब वे लोग बिलाम के यहां ठहर गए। तब परमेश्वर ने बिलाम के पास आकर पूछा, कि तेरे यहां ये आदमी कौन हैं? बिलाम ने परमेश्वर से कहा, कि सिप्पोर के पुत्र मोआब के राजा बालाक ने मेरे पास यह कहला भेजा है, कि जो दल मिसर से निकल आया है, उस से भूमि ढंक गई है; इसलिये आकर उन्हें मेरे लिये शाप दे, तब मैं उन से लड़कर बरबस निकाल सकूंगा। परमेश्वर ने बिलाम से कहा, तू इन के संग मत जा; उन लोगों को शाप मत दे, क्योंकि वे आशीष के भागी हो चुके हैं। सो, भोर को बिलाम ने उठकर बालाक के हाकिमों से कहा, तुम अपने देश को चले जाओ; क्योंकि यहोवा मुझे तुम्हारे साथ जाने की आज्ञा नहीं देता। तब मोआबी हाकिम वापस चले गए, और उन्होंने बालाक के पास जाकर कहा, कि बिलाम ने हमारे साथ आने से मना कर दिया है। इस पर बालाक ने फिर से और हाकिम भेजे, जो पहलों से प्रतिष्ठित और गिनती में भी अधिक थे। उन्होंने बिलाम के पास आकर कहा, कि सिप्पोर का पुत्र बालाक यों कहता है, कि मेरे पास आने से किसी कारण मना मत कर। क्योंकि मैं निश्यच तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा; इसलिये आ और उन लोगों को मेरे लिये शाप दे। इस पर बिलाम ने बालाक के कर्मचारियों को जवाब देकर कहा, कि चाहे बालाक अपने घर को सोने-चांदी से भरकर मुझे दे दे, तो भी मैं अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को पलट नहीं सकता, कि उसे घटाकर या बढ़ाकर मानूं। इसलिये अब तुम लोग भी आज रात को यहीं रुको, ताकि में जान लूं, कि यहोवा मुझ से और क्या कहता है। और परमेश्वर ने रात

को बिलाम के पास आकर कहा, यदि वे आदमी तुझे बुलाने आए हैं, तो तू उठकर उन के संग जा; परन्तु जो बात मैं तुझ से कहूं उसी के अनुसार करना। तब बिलाम भोर को उठा, और अपनी गदही पर काठी बांधकर, मेआबी हाकिमों के संग चल पड़ा।

किन्तु, तब उसके जाने के कारण परमेश्वर का कोप भड़क उठा, और यहोवा का दूत उसका विरोध करने के लिये उसका मार्ग रोककर खड़ा हो गया। वह तो अपनी गदही पर सवार होकर जा रहा था, और उसके संग उसके दो सेवक भी थे। और उस गदही को यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा; तब गदही मार्ग छोड़कर खेत में चली गई; तब बिलाम ने गदही को मारा, कि वह मार्ग पर फिर आ जाए। तब यहोवा का दूत दाख की बारियों के बीच गली में, जिस के दोनों ओर बारी की दीवार थी, खड़ा हुआ। तब यहोवा के दूत को देखकर गदही दीवार से ऐसी सट गई, कि बिलाम का पांव दीवार से दब गया; तब उसने उस को फिर मारा। तब परमेश्वर का दूत आगे बढ़कर एक सकेत स्थान पर खड़ा हुआ, जहां न तो दहिनी ओर हटने की जगह थी और न बाईं ओर। वहां यहोवा के दूत को देखकर गदही बिलाम को लिये दिये वहीं बैठ गई। फिर तो बिलाम का कोप भड़क उठा, और उस ने गदही को लाठी से मारा। तब परमेश्वर ने गदही का मुंह खोल दिया, और वह बिलाम से कहने लगी, कि मैंने तेरा क्या किया है कि तूने मुझे तीन बार मारा? बिलाम ने गदही से कहा, यह कि तूने मुझ से नटखटी की है। यदि मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं तुझे अभी मार डालता। गदही ने बिलाम से कहा, क्या मैं तेरी वही गदही नहीं जिस पर तू जन्म से आज तक चढ़ता आया है? क्या मैं तुझ से कभी ऐसा करती थी? वह बोला, नहीं। तब परमेश्वर ने बिलाम की आंखें खोलीं, और उसको यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग

में खड़ा दिखाई दिया; तब वह झुक गया, और मुंह के बल गिरकर दन्डवत किया। तब यहोवा के दूत ने उस से कहा, तूने अपनी गदही को तीन बार क्यों मारा? सुन, तेरा विरोध करने को मैं ही आया हूं, इसलिये कि तू मेरे सामने उलटी चाल चलता है; और यह गदही मुझे देखकर मेरे सामने से तीन बार हट गई। और यदि वह मेरे सामने से नहीं हटती, तो निःसन्देह, मैं अब तक तुझे तो मार ही डालता, परन्तु उसको जीवित छोड़ देता। तब बिलाम ने यहोवा के दूत से कहा, मैंने पाप किया है; मैं नहीं जानता था कि तू मेरा सामना करने को मेरे सामने खड़ा है। इसलिये अब यदि तुझको बुरा लगता है, तो मैं लौट जाता हूं। यहोवा के दूत ने बिलाम से कहा, इन पुरुषों के साथ चला जा; परन्तु केवल वह बात कहना जो मैं तुझ से कहूंगा। तब बिलाम बालाक के हाकिमों के साथ चला गया।"

बाइबल में लिखे इस वृत्तान्त के द्वारा जो शिक्षा हमें मिलती है वह बिल्कुल स्पष्ट है: अर्थात् यह, कि परमेश्वर ने जो एक बार कह दिया, उसमें कोई भी बदलाव नहीं किया जा सकता। बिलाम, जिसके बारे में अभी हम ने देखा, जानता था कि परमेश्वर ने उसे जाने को मना किया है। लेकिन तो भी वह इस बारे में दोबारा परमेश्वर के पास जानने के लिये गया। यानि बिलाम अपनी इच्छा को परमेश्वर पर थोपना चाहता था; क्योंकि वह स्वयं जाना चाहता था। सो उसे सबक सिखाने के लिये परमेश्वर ने उसे जाने की अनुमति तो दे दी। पर फिर परमेश्वर ने मार्ग में उसे एक ऐसा पाठ सिखाया जिस से बिलाम की आंखें खुल गईं। और उस ने सीख लिया कि परमेश्वर की आज्ञा को वैसे ही न मानकर जैसे कि परमेश्वर चाहता है, उस ने कैसा भारी पाप किया है।

आज परमेश्वर हम से अपने वचन की पुस्तक बाइबल के द्वारा बोलता है। और जैसा हम परमेश्वर की पुस्तक में पढ़ते हैं,

परमेश्वर चाहता है, कि हम वैसा ही करें। जैसे कि, उदाहरण के लिये प्रभु यीशु ने मरकुस 16:16 में कहा था, कि उद्धार पाने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को उसमे विश्वास करके बपतिस्मा लेना चाहिए। सो मुक्ति पाने का और कोई उपाय नहीं है। परमेश्वर ने कहा है, और हमारा कर्त्तव्य यह है कि हम उसकी बात मानें। और यदि हम परमेश्वर की बात मानेंगे तो हम जानते हैं कि परमेश्वर न हमें केवल इसी जीवन में, परन्तु आनेवाले जीवन में भी आशीषित करेगा।

अनुग्रह और उद्धार

मित्रो, बाइबल में उत्पत्ति की पुस्तक के 6 और 7 अध्यायों में हम एक महा-जल-प्रलय के बारे में पढ़ते हैं। बाइबल में लिखा है, कि वह जल-प्रलय इतना भयानक था, कि चालीस रात और चालीस दिन तक लगातार ज़बरदस्त बारिश होती रही। और जल पृथ्वी पर एक सौ पचास दिनों तक प्रबल रहा। और दस महीनों तक जल पृथ्वी पर घटता रहा और तब जाकर कहीं पहाड़ों की चोटियां दिखाई पड़ीं। हाल ही के कुछ वर्षों में कुछ ऐसी सच्चाईयां सामने आई हैं, जो इस बात की पुष्टि करती हैं कि किसी समय पृथ्वी पर वास्तव में एक बहुत भारी जल-प्रलय आया था। जैसे कि ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों की चोटियों पर मिट्टी से बने खिलौनों और बर्तनों आदि का पाया जाना। जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि जल का स्तर किसी समय ज़मीन पर इतना अधिक हो गया था, कि जिस से पहाड़ों की चोटियां तक ढक गई थीं। एक और बात इसी सम्बन्ध में यह भी देखी गई है, कि ऊंचे-ऊचे पहाड़ों से नीचे आते समय जगह-जगह पर पानी के रुके रहने के निशान पाए गए हैं। यानि पानी पृथ्वी पर इतने अधिक समय तक खड़ा रहा था, और धीरे-धीरे घटा था, कि उससे जगह-जगह पर पहाड़ों पर जल के टिके रहने के निशान पड़ गए थे।

और बाइबल हमें यह भी बताती है, कि यह जल प्रलय परमेश्वर ने जानबूझकर पृथ्वी पर भेजा था। क्योंकि परमेश्वर ने देखा था कि पृथ्वी पर उस समय लोग ऐसे पापी और चरित्रहीन हो गए थे, कि यहां तक कि उनके मनों में और सोच विचारों में

जो कुछ भी उत्पन्न होता था, वह केवल बुरा ही होता था। यानि वे बुराई के सिवा और कुछ सोच ही नहीं सकते थे। उनकी आंखों में, और मन में और विचारों में केवल बुरा ही उत्पन्न होता था। सो परमेश्वर ने उस समय सारे जगत को नाश करने की ठान ली थी। किन्तु, परमेश्वर ने उस पापी संसार में उस समय एक ऐसा व्यक्ति भी देखा था, जो परमेश्वर से डरता था, और बुराई से घृणा करता था। और बाइबल में उस के बारे में लिखा है, कि वह एक धर्मी पुरुष था, और अपने समय के सब लोगों में खरा था और वह परमेश्वर के साथ-साथ चलता था। और उस व्यक्ति का नाम नूह था।

सो जबकि परमेश्वर ने सारे जगत को नाश करने की सोच ली थी, तो भी, बाइबल कहती है, "परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही।" सो परमेश्वर ने नूह से कहा था कि, "तू गोपेर वृक्ष की लकड़ी का एक जहाज़ बना ले, और उस में कोठरियां बनाना, और भीतर बाहर उस पर राल लगाना। और इस ढ़ंग से उस को बनाना: जहाज़ की लम्बाई तीन सौ हाथ, चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की हो। जहाज़ में एक खिड़की बनाना, और उसके एक हाथ ऊपर उसकी छत बनाना, और जहाज़ की एक अलंग में एक द्वार रखना, और जहाज़ में पहला, दूसरा, और तीसरा खन्ड बनाना। और सुन मैं आप पृथ्वी पर जल प्रलय करके सब प्राणियों को, जिनमें जीवन की श्वास है आकाश के नीचे से नाश करने पर हूं। और सब जो पृथ्वी पर हैं मर जाएंगे। परन्तु तेरे संग मैं वाचा बांधता हूं: इसलिये तू अपने पुत्रों, स्त्री और बहुओं समेत जहाज़ में प्रवेश करना। और सब जीवित प्राणियों में से, तू एक-एक जाति के दो-दो, अर्थात् एक नर और एक मादा जहाज़ में ले जाकर अपने साथ जीवित रखना। एक-एक जाति के पक्षी, और एक-एक जाति के पशु, और एक-एक जाति के भूमि

पर रेंगनेवाले, सब में से दो-दो तेरे पास आएंगे, कि तू उन को जीवित रखे। और भांति-भांति का भोज्य पदार्थ जो सबके खाने के लिये है, उनको तू लेकर अपने पास इकट्ठा कर रखना, जो तेरे और उन के भोजन के लिये होगा। और परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया।"

यहां विशेष रूप से इस बात पर ध्यान दें कि जैसे-जैसे परमेश्वर ने कहा था, नूह ने ठीक वैसे ही किया था। अर्थात् उसने गोपेर की लकड़ी से ही सारा का सारा जहाज़ बनाया था। और उसकी लम्बाई और चौड़ाई और ऊंचाई भी उतनी ही रखी थी जितनी परमेश्वर ने बोली थी। खिड़की और द्वार उसने वहीं बनाए थे जहां परमेश्वर.ने कहा था। और उतने ही खन्ड बनाए थे जितने बनाने की आज्ञा उसे परमेश्वर से मिली थी। अर्थात्, नूह ने न तो परमेश्वर की आज्ञा में कुछ जोड़ा था, और न ही उसमें से कुछ घटाया था। उसने ठीक वैसे ही सब कुछ किया था जैसे कि परमेश्वर ने उसे करने को कहा था। अब मान लें, कि परमेश्वर ने नूह को सिर्फ़ यही कहा होता, कि तू एक बड़ा जहाज़ बना ले और उसके भीतर मैं तुझे तेरे परिवार समेत सब को बचा लूंगा। तो फिर यह सोचना और करना नूह का काम था, कि वह कौन सी लकड़ी का उपयोग करता, और जहाज़ की लम्बाई और चौड़ाई और ऊंचाई कितनी रखता; और खिड़की और द्वार कहां और कितने बनाता। लेकिन क्योंकि परमेश्वर ने नूह को हर एक बात के लिये विशेष रूप से बता दिया था, इसलिये नूह ने परमेश्वर की हर एक बात का वैसे ही पालन किया था जैसे कि परमेश्वर ने नूह से कहा था। क्योंकि नूह परमेश्वर से डरता था, और उसकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करता था। और यही मुख्य कारण था, कि जबकि परमेश्वर ने और सब को तो नाश कर दिया था, पर नूह को उसके परिवार समेत बचा लिया था।

इस महान घटना के हज़ारों वर्ष बाद प्रभु यीशु मसीह के एक चेले, पतरस ने, बाइबल के नए नियम में, पहले पतरस की पत्री के तीसरे अध्याय की 20 और 21 आयतों में लिखकर इस प्रकार कहा था: कि, "जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज़ बन रहा था, जिसमें बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है।" क्यों पतरस ने यहां कहा था, कि उसी पानी के दृष्टान्त पर अब बततिस्मा भी तुम्हें बचाता है? इसलिये, क्योंकि प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु और जी उठने और स्वर्ग पर वापस जाने से पहले अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा था कि मेरे सुसमाचार को सारे जगत में जाकर सुनाओ और जो व्यक्ति सुनकर विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस 16:15-16)।

अर्थात् जिस प्रकार पानी के द्वारा परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से नूह के साथ उसके परिवार को बचाया था। उसी प्रकार आज हमें भी वह पाप के कारण नाश होने से उस समय अपने अनुग्रह से बचाता है, जब हम उसके पुत्र मसीह में विश्वास करके अपने पापों की क्षमा पाने के लिये बपतिस्मा के द्वारा पानी में गाड़े जाकर उसमें से बाहर आते हैं। और पतरस कहता है, कि उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, पर शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है।

नूह परमेश्वर पर पूरा विश्वास रखता था। पर वह केवल विश्वास करके ही जलप्रलय से नहीं बचा था। नूह ने परमेश्वर पर विश्वास किया था और उसकी आज्ञा को भी माना था। और इसलिये परमेश्वर ने उसे अपने अनुग्रह से बचाया था। और इसी

प्रकार से हम सब का उद्धार भी परमेश्वर के अनुग्रह से ही होगा, लेकिन केवल तभी जब हम परमेश्वर की आज्ञाओं को मानेंगे। अकसर लोग केवल विश्वास करने पर ही अधिक बल देते हैं। लेकिन बाइबल में ऐसे विश्वास को एक मरा हुआ विश्वास कहा गया है जो मनुष्य को परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिये प्रोत्साहित नहीं करता (याकूब 2:24, 26)।

परमेश्वर चाहता है कि न केवल हम उसमें और उसकी बातों में विश्वास ही करें, पर उसकी हर एक आज्ञा को भी वैसे ही मानें जैसे की वह चाहता है। (मत्ती 7:21)।

आत्मिक सुरक्षा

किसी भी देश के लिये उसकी सुरक्षा बड़ी ही महत्त्वपूर्ण होती है। प्रत्येक देश अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिये हर वर्ष करोड़ों रुपए खर्च करता है। क्योंकि प्रत्येक देश सुरक्षित रहना चाहता है। और सुरक्षा की आवश्यकता इसलिए अनुभव होती है, क्योंकि खतरा कभी भी आ सकता है। ठीक यही बात हम अपने घरों में और अपने जीवन में भी देखते हैं। लालच, बुराई, चोरी, डकैती संसार भर में बढ़ रहे हैं। एक समय था, जब लोगों को हवाई जहाज़ में यात्रा करने के लिये केवल अपने कागज़ात को ही दिखाना पड़ता था। पर अब ऐसा नहीं है। अब हर एक यात्री को कड़ी सुरक्षा जांच से होकर गुज़रना पड़ता है। घरों में लोग तार और लोहे ही सलाखें लगवाते हैं; मज़बूत दरवाज़े और ताले लगाते हैं। एक समय था जब लोगों को केवल जंगली जानवरों का ही डर रहता था। पर अब उस से भी ज्यादा लोग इन्सानों से डरते हैं! पर सुरक्षा फिर भी नहीं मिलती। पृथ्वी पर हर एक इंसान सब जगह असुरक्षित है। चाहे आम लोग हों, चाहे धनवान हों, या राजनीति में हों। सब स्थानों पर लोग असुरक्षित हैं। कुछ लोग अपने आपको इतना असुरक्षित भी अनुभव करते हैं कि वे अपने सब तरफ सुरक्षा का प्रबन्ध करवा लेते हैं। जहां जाते हैं सुरक्षा कर्मचारियों के साथ जाते हैं। लेकिन फिर भी वे अपने आप को खतरे से वास्तव में नहीं बचा पाते। हमारे मेडिकल साइन्स ने आज ऐसी उन्नति और प्रगति कर ली है; और ऐसे बड़े-बड़े उपकरण और डॉक्टर आज सारे संसार में उपलब्ध हैं, कि वे कभी-कभी मरीज़ को मौत के मुंह से भी निकाल लेते हैं। पर कुछ समय पश्चात वही अनुभवी डॉक्टर उन्हीं रोगों की चपेट में आकर स्वयं

अपने आप को भी नहीं बचा पाते!

परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में लिखा है, युहन्ना 6:27 में, प्रभु यीशु ने कहा था, कि, "नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो परन्तु उस भोजन के लिये करो जो अनन्त जीवन तक ठहरता है।" यह उपदेश प्रभु ने उन लोगों को दिया था, जो उसे रोटियों के लिये ढूंढ रहे थे, क्योंकि एक ही दिन पहले प्रभु ने आश्चर्यक्रम करके उनके लिए इतना ढेर भोजन पैदा कर दिया था, कि न केवल पांच हज़ार लोगों ने पेट भर के खाया ही था, पर बाद में बारह टोकरे भरके रोटियों के टुकड़े उठाए गए थे। सो वे उस नाशमान भोजन को प्राप्त करने के लिये प्रभु को फिर से ढूंढ रहे थे। पर यीशु ने उनसे कहा, कि नाशमान नहीं, पर उस भोजन को प्राप्त करने के लिये परिश्रम करो जो अनन्त जीवन तक ठहरता है! वे शारीरिक भोजन ढूंढ रहे थे, लेकिन प्रभु ने उनसे कहा, कि इससे भी अधिक आवश्यकता उन्हें उस भोजन की है जो आत्मिक है और जो अनन्त है। अब इसका अर्थ यह नहीं है, कि प्रभु उनसे कह रहा था कि उन्हें शारीरिक भोजन की आवश्यकता ही नहीं है। क्योंकि यदि ऐसा होता, तो प्रभु ने स्वयं, एक दिन पहले, उन्हें भोजन क्यों दिया था? पर जिस बात को प्रभु उनको सिखा रहा था वह यह थी, कि शारीरिक भोजन से भी अधिक आवश्यकता उन्हें आत्मिक भोजन की है। क्योंकि शरीर मनुष्य का वह भाग है, जो नाशमान है, अर्थात् शरीर को हमेशा के लिये बचाया नहीं जा सकता। उसकी सुरक्षा के प्रबन्ध करके भी हम उसे वास्तव में सुरक्षित नहीं रख सकते। और उसे बचाना चाहकर भी हम उसे बचा नहीं सकते। क्योंकि शरीर तो है ही नाशमान। उसे तो एक न एक दिन मिट्टी में मिलना ही है।

पर आत्मा मनुष्य का वह भाग है जिस के अस्तित्व को पृथ्वी पर कोई वस्तु नहीं मिटा सकती। मनुष्य की आत्मा अमर और अविनाश है। परमेश्वर की बाइबल में लिखा है, कि मनुष्य के शरीर

को परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी से बनाया था, पर उस शरीर के भीतर परमेश्वर ने अपने आत्मा के जीवन को फूंका था। सो मनुष्य एक आत्मिक प्राणी बन गया था। वह परमेश्वर के स्वरूप और उसकी समानता पर बनाया गया एक प्राणी था। इसलिये, जैसे परमेश्वर, जो परमात्मा है, सर्वदा विद्यमान रहेगा, ऐसे ही हरएक इन्सान भी हमेशा वर्तमान रहेगा – अर्थात् आत्मिक रूप से। इसलिये प्रभु यीशु ने उन लोगों से कहा था, कि नाशमान भोजन जो नाशमान शरीर के लिये है, उसकी चिन्ता करना छोड़कर, आत्मिक भोजन की, जो आत्मा के लिये है, खोज करो। और एक अन्य स्थान पर प्रभु ने लोगों को शिक्षा देकर कहा था, कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु परमेश्वर के मुख से निकले वचन से जीवित रहेगा। (मत्ती 4:4)। इसका अर्थ क्या है? इसका मतलब यह है, कि रोटी से तो इन्सान शारीरिक रूप से ही कुछ समय तक ज़िन्दा रह सकता है, पर आत्मा को जीवित रखने के लिये परमश्वेर के वचन की ज़रूरत है। तो क्या इसका अर्थ यह है कि आत्मा मर सकती है? पर आत्मा तो अमर है, वह तो हमेशा वर्तमान रहेगी। जी हां, यह बात तो बिलकुल सच है, कि आत्मा अमर है, और उसका अस्तित्व कभी नहीं मिट सकता। पर जब हम मरने के वास्तविक अर्थ को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि मरे का अर्थ वास्तव में अलग होना है। जैसे कि आत्मा का शरीर से अलग हो जाना मृत्यु कहलाता है। ऐसे ही, परमेश्वर अर्थात् परमात्मा से आत्मा का अलग हो जाना भी मृत्यु कहलाता है। यानि जब मनुष्य की आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से टूट जाता है, तो मनुष्य आत्मिक रूप से मर जाता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य की आत्मा का अस्तित्व समाप्त हो जाता है – क्योंकि आत्मा तो अविनाश है। पर आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से टूट जाना मृत्यु कहलाता है। जैसे कि आपका रेडियो जो अभी बज रहा है। पर अगर आप रेडियो के पलग को सॉकेट में से निकाल लें तो रेडियो बजना बन्द हो जाएगा। आपका

रेडियो खराब नहीं हुआ, पर उसकी आवाज बन्द हो गई, क्योंकि बिजली से उसका सम्बन्ध टूट गया है। बिजली या बैटरी वह मुख्य स्त्रोत है जिसकी शक्ति से रेडियो बजता है। परन्तु जब मुख्य स्त्रोत से उसे अलग कर दिया जाता है तो वह बजना बंद हो जाता है, अर्थात् मर जाता है। ऐसे ही हर एक इन्सान भी है। जब उसका जन्म होता है, तो उसकी आत्मा का सम्पर्क ईश्वर से रहता है। पर जब वह बालक बड़ा हो जाता है और अच्छाई और बुराई को समझने लगता है, तो पाप में पड़कर वह परमात्मा से अपना सम्बन्ध तोड़ लेता है। और इस तरह से आत्मिक रूप से मर जाता है।

प्रभु यीशु मसीह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच इसीलिये आया था, ताकि इन्सान के उस टूटे हुए सम्बन्ध को फिर से परमात्मा के साथ जोड़ दे। और परमेश्वर और मनुष्य के बीच में सम्बन्ध टूटने का एकमात्र जो कारण था, वह था पाप। परमेश्वर मनुष्य के साथ रह सकता है परन्तु पाप के साथ नहीं। तौभी प्रत्येक मनुष्य जब इस जगत को छोड़कर जाता है, तो वह उन दो में से किसी एक आत्मिक स्थान में प्रवेश करने के लिये जाता है जिन्हें बाइबल में स्वर्ग और नरक कहकर सम्बोधित किया गया है। नरक एक आत्मिक स्थान है, और ऐसे ही स्वर्ग भी एक आत्मिक स्थान है। और जिस प्रकार आत्मा सदा विद्यमान रहेगी, ऐसे ही स्वर्ग और नरक भी हमेशा विद्यमान रहेंगे। यानि प्रत्येक आत्मा का अनन्त निवास स्थान या तो स्वर्ग में होगा या नरक में होगा। नरक वह स्थान है, जहां वे आत्माएं होंगी जिन्होंने अपने पाप से छुटकारा प्राप्त नहीं किया है। और स्वर्ग में वे आत्माएं प्रवेश करेंगी जिन्होंने अपने पापों से छुटकारा पा लिया है। स्वर्ग में अनन्त जीवन है, क्योंकि वहां परमेश्वर है। पर नरक में अनन्त मृत्यु है, क्योंकि वहां परमेश्वर नहीं है।

किन्तु, परमेश्वर हम में से हर एक को स्वर्ग में अपने पास अनन्त जीवन देना चाहता है। और इसलिये परमेश्वर ने पृथ्वी पर हर

एक इन्सान के पापों का प्रायश्चित करने का एक उपाय बनाया है। क्योंकि यदि कोई व्यक्ति स्वर्ग में नहीं जा पाएगा, तो वह पाप के कारण ही नहीं जा पाएगा। और बाइबल में यह भी कहा गया है, कि सब ने पाप किया है। पर यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र, बाइबल कहती है, सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। (रोमियों 3:23; 6:23; 1 यूहन्ना 2:2, 4:10)।

आज यदि हम परमेश्वर के सुसमाचार को स्वीकार कर लें तो हम अपनी आत्मा को हमेशा के लिये सुरक्षित कर सकते हैं। हम इस बात को निश्चित रूप से जान सकते हैं, कि हमारे पापों का प्रायश्चित किया जा चुका है, और हम ने परमेश्वर की उस बात को मान लिया है, जिसको मानने से हर एक इन्सान अपने आपको स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बना सकता है। परमेश्वर चाहता है, कि पृथ्वी पर हर एक व्यक्ति उस के पुत्र में विश्वास लाए कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है। और हर एक बुराई से अपना मन फिराकर अपने पापों से छुटकारा पाने के लिये पानी में उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा ले। और इस प्रकार उसकी आज्ञा को मानकर, अपना प्रतिदिन का जीवन उन्हीं आदर्शों पर चलकर व्यतीत करे जिसकी शिक्षा हमें प्रभु यीशु के जीवन से मिलती है।

निश्चय ही, शारीरिक रूप से तो हम में से कोई भी अपने आपको वास्तव में सुरक्षित नहीं बना सकता। पर हम में से हर एक आत्मिक रूप से अपने आपको अवश्य सुरक्षित कर सकता है। परमेश्वर की बाइबल में, गलतियों 3:26, 27 में, इस प्रकार लिखा है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहन लिया है। क्या आप मसीह में सुरक्षित हैं? यदि नहीं, तो उसमें विश्वास लाईए, और उसकी आज्ञा को मानकर उसे पहन लीजिए। क्योंकि आत्मिक सुरक्षा का आश्वासन केवल उसी में है।

आपने कहां से सीखा है?

बाइबल में रोमियों 10:17 में लिखा है कि "विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।" वास्तव में यह एक सिद्धान्त है। किसी भी बात पर विश्वास करने से पहले, हम उस बात के बारे में सुनते हैं, या पढ़ते हैं, या देखते हैं। हम में से किसी ने भी प्रभु यीशु मसीह को नहीं देखा है। पर हम ने उसके बारे में पढ़ा है और सुना है। पर हमारा विश्वास वही होता है, जो हम सुनते हैं या पढ़ते हैं। अब, जैसे कि, कुछ लोग यह विश्वास करते हैं, कि यीशु मसीह एक अच्छा शिक्षक था और एक धार्मिक गुरू था, पर इसके अलावा और कुछ नहीं था। अब ऐसा विश्वास वे क्यों करते हैं? निश्चय ही उनका विश्वास बाइबल में लिखी बातों पर आधारित नहीं है, पर ऐसा उन्हों ने कहीं से या किसी से सुना है। क्योंकि बाइबल तो हमें यीशु मसीह के बारे में यह बताती है, कि वह स्वयं परमेश्वर और परमेश्वर का एकलौता पुत्र है। (यूहन्ना 1:1, 14)। वह आदि से परमेश्वरत्व में परमेश्वर के साथ था, और मनुष्य का उद्धार करने के लिये ईश्वरत्व से अलग होकर, स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था, और इसलिये वह पृथ्वी पर परमेश्वर का एकलौता पुत्र कहलाया था। सो यह बड़ा ही महत्वपूर्ण है, कि आपने किस बात के बारे में कहां से सुना है।

अब ऐसे ही कुछ लोग विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह की मसीहीयत पश्चिमी देशों का धर्म है। पर वास्तविकता क्या है? प्रभु यीशु मसीह का जन्म कहां हुआ था? अमरीका में या इंग्लैण्ड में? मसीह को क्रूस पर चढ़ाकर कहां मारा गया था? और

सबसे पहले मसीह के सुसमाचार का प्रचार कहां किया गया था? बाइबल के अनुसार, यीशु मसीह का जन्म, और उसके सब काम, उसकी मृत्यु और जी उठना और स्वर्ग पर वापस चले जाना, और उसके सुसमाचार का प्रचार किया जाना, ये सब बातें यरुशलेम में पूरी हुई थीं; और यरुशलेम एशिया में है। इसलिये, यह विश्वास करना कि मसीहीयत पश्चिमी देशों का धर्म है सही नहीं है। क्योंकि इससे भी पहले, कि पश्चिमी देशों में मसीह का सुसमाचार पहुंचता, प्रभु यीशु मसीह के अनेकों अनुयायी एशिया में मौजूद थे।

प्रभु यीशु मसीह ने सिखाया था कि, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे, और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।" (लूका 9:23) इसलिये, यह विश्वास करना कि किसी को सांसारिक वस्तुओं का लालच देकर मसीह का अनुयायी बनाया जा सकता है बिल्कुल सही नहीं है। क्योंकि मसीह का अनुयायी बनने के लिये स्वयं प्रत्येक व्यक्ति को एक यह व्यक्तिगत निश्चय करना आवश्यक है, कि क्या वह प्रतिदिन अपना क्रूस उठाकर मसीह के पीछे चलने को तैयार है? क्रूस उठाकर मसीह के पीछे चलने का अभिप्राय इस बात से है, कि जो व्यक्ति मसीह का अनुसरण करना चाहता है; मसीह का एक अनुयायी बनना चाहता है; अर्थात् एक मसीही बनना चाहता है, उसे इस बात का निश्चय कर लेना चाहिए, व्यक्तिगत रूप से, कि मसीह के पीछे चलने के लिये मैं हर एक बुराई और परीक्षा का सामना करने के लिये, हर एक त्याग और बलिदान करने के लिये तैयार हूं। मसीह के पीछे चलने का अर्थ यह नहीं है, कि "मुझे क्या मिलेगा?" पर इस बात से है, कि "मैं मसीह के लिये क्या देने को तैयार हूं?" और जब इस दृष्टिकोण को लेकर हम मसीह के पास आते हैं, तो हम जानते हैं कि जो हमें मसीह से मिलेगा, वह यह संसार

नहीं दे सकता। क्योंकि मसीह में हमें आत्मिक शांति और आनन्द मिलता है। मसीह ने हमें मुक्ति और उद्धार देने के लिये अपने आप को हमारे पापों का प्रायश्चित करने को बलिदान दिया था, ताकि हमें उसके द्वारा पाप से छुटकारा और स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी मिल जाए।

पर मसीह ने कहा था, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप से इन्कार करके और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे आए। इसलिये यह विश्वास करना, कि कोई मनुष्य अपने जन्म से ही एक मसीही है, बिल्कुल गलत है। क्योंकि जब किसी का जन्म होता है, तो वह नन्हा बालक एक स्वर्गदूत की तरह पवित्र होता है। हो सकता है, उसके माता-पिता चरित्रहीन और पृथ्वी पर प्रत्येक पाप से जुड़े हुए हों, या चाहे वे बड़े ही अच्छे और चरित्रवान हों। पर, जब एक बच्चा जन्म लेता है, तो उस में कोई पाप नहीं होता। पर वही बालक जब बड़ा हो जाता है; जब उस में अच्छाई और बुराई को समझने की क्षमता आ जाती है, तो उस समय वह स्वयं अपने ही पापों के कारण परमेश्वर की दृष्टि में एक पापी बन जाता है। और तब यह आवश्यक है, कि वह यीशु मसीह के सुसमाचार को सुनकर उसमें विश्वास लाए, और पाप से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये प्रभु यीशु मसीह की आज्ञानुसार जल के भीतर गाड़े जाकर बपतिस्मा ले, जैसे कि बाइबल से हम सीखते हैं। (मत्ती 28:19; मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:37, 38, 41, 47; रोमियों 6:3-5)।

इसलिये यह विश्वास करना, कि जब एक बच्चा कुछ हफ़्तों का हो जाए तो उसका बपतिस्मा करवाना चाहिए, बिल्कुल गलत है। यह बाइबल की शिक्षा नहीं है। बाइबल ऐसा कहीं नहीं सिखाती। बाइबल के अनुसार बपतिस्मा छोटे बालकों के लिये नहीं है। किन्तु मसीह ने कहा था, जैसा कि हम मरकुस 16:16 में पढ़ते

हैं, कि जो विश्वास करके बपतिस्मा लेगा उद्धार उसी का होगा। लेकिन मनुष्यों ने मसीह की शिक्षा को उल्टा करके सिखाना और मानना आरम्भ कर दिया है। वे कहते हैं, कि उद्धार पाने के लिये पहले बपतिस्मा दे दो, जब बच्चा छोटा हो, और बाद में बड़े होने पर उसे विश्वास करने की शिक्षा दो। हज़ारों और लाखों लोग आज भी ऐसा ही मान रहे हैं और ऐसा ही कर रहे हैं। पर यह बातें उन्होंने कहां से सीखी हैं? यह शिक्षा उन्होंने इन्सानों से सीखी है, क्योंकि बाइबल ऐसा नहीं सिखाती है। और कितनी भयानक है यह शिक्षा, इस बात को हम इस प्रकार देखते हैं, कि जिन लोगों का बपतिस्मा उनके माता-पिता ने बालकपन में करवा दिया होता है, जब उन्हें सिखाया जाता है, कि बाइबल यह कहती है, कि प्रत्येक व्यक्ति को मसीह में विश्वास करके उद्धार पाने के लिये और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए। तो उनका जवाब यह होता है, कि "हमारा बपतिस्मा तो बचपन में ही हमारे माता-पिता ने करवा दिया था।" और इस कारण से वे परमेश्वर की आज्ञा मानने से इन्कार कर देते हैं।

सो यह बात बड़ी ही गम्भीर है, कि जिन बातों को हम मानते हैं; जिन पर हम विश्वास करते हैं, उनका स्त्रोत क्या है, अर्थात् उन्हें हमने कहां से प्राप्त किया है और कहां से सीखा है? क्या वह परमेश्वर के वचन की शिक्षा है या मनुष्यों की शिक्षा है? क्योंकि प्रभु यीशु ने ऐसे लोगों के बारे में जो मनुष्यों की शिक्षाओं और विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं, मत्ती 15:9 में कहा था, कि वे लोग व्यर्थ में मेरी उपासना करते हैं क्योंकि वे मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके मानते हैं।

परमेश्वर ने सारी मानवता के लिये अपनी सम्पूर्ण इच्छा को हमेशा के लिये अपनी पुस्तक बाइबल में प्रकट कर दिया है। और यह मनुष्य का कर्त्तव्य है, कि वह परमेश्वर की इच्छा को जाने

और उस पर चले। परमेश्वर किसी भी इन्सान को अपनी इच्छा पर चलने के लिये अपनी बात को मानने के लिये मजबूर नहीं करता। उसने मनुष्य को बनाया है, और मनुष्य पर प्रकट किया है, कि वह उस से क्या चाहता है। बाइबल में परमेश्वर ने मनुष्य को बताया है, कि आरम्भ में उसने मनुष्य को पवित्र और पाप के बिना बनाया था। पर अपनी ही इच्छा से मनुष्य ने अपने आप को परमेश्वर से अलग कर लिया है। और परमेश्वर ने मनुष्य को पाप से छुटकारा दिलवाने के लिये क्या किया है। किस तरह से इन्सान अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके परमेश्वर के योग्य, अर्थात् उसके स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन सकता है। और यह कर्त्तव्य प्रत्येक मनुष्य का है कि वह परमेश्वर की इच्छा को जाने और उस पर चलकर अपनी जीवन यात्रा को पृथ्वी पर पूरा करे। क्योंकि परमेश्वर ने बाइबल में यह भी बताया है, कि एक दिन वह सब लोगों का न्याय करेगा; और वह न्याय वह उन्हीं बातों के आधार पर करेगा जिन्हें परमेश्वर ने अपनी पुस्तक में लिखवाकर हमें दिया है। बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। बाइबल के द्वारा परमेश्वर ने अपनी इच्छा को सारी मानवता पर प्रदर्शित किया है। और यही कारण है कि क्यों मैं बार-बार आपका ध्यान बाइबल में लिखी बातों पर दिलाता हूं।

परमेश्वर अपनी इच्छा पर चलने के लिये हम सब को बुद्धि और शक्ति दे।

परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा

प्रभु यीशु ने, यूहन्ना 3:16 में, कहा था, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। और आज अपने पाठ में हम प्रभु यीशु मसीह के इन्हीं शब्दों पर विचार करने जा रहे हैं।

सबसे पहले, प्रभु यीशु ने हमारा ध्यान परमेश्वर पर दिलाकर कहा था, कि "परमेश्वर ने।" परमेश्वर कौन है? बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर आत्मा है। (यूहन्ना 4:24)। परमेश्वर कोई मनुष्य नहीं है; परमेश्वर कोई पशु नहीं है; और परमेश्वर जगत की कोई निर्जीव वस्तु नहीं है। हम परमेश्वर को अपनी कल्पना में कैद नहीं कर सकते। हम परमेश्वर को सीमित नहीं कर सकते। आज से लगभग दो हज़ार साल पहले प्रभु यीशु का प्रेरित पौलुस जब यूनान के अथेने नाम के नगर में गया था, तो उसने वहां देखा था कि वहां के लोग बड़े ही धार्मिक स्वभाव के थे। पौलुस वहां परमेश्वर और उसके सुसमाचार का प्रचार करने को गया था। सो पौलुस ने उनसे कहा था, कि, "हे अथेने के लोगो मैं देखता हूं कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े माननेवाले हो। क्योंकि जब मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, "अनजाने ईश्वर के लिये।" सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसी का समाचार सुनाता हूं। जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और इस की सब वस्तुओं को बनाया है, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। और न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों

की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है। उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिये बान्धा है, कि वे परमेश्वर को ढूंढे कि कदाचित उसे टटोलकर पा जाएं, तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं! क्योंकि हम उसी में जीवित रहते हैं, और चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश भी हैं। सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं, कि ईश्वरत्व, सोने या रुपए या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पनाओं से गढ़े गए हों। इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।" (प्रेरितों 17:22-30)। सो परमेश्वर परम-आत्मा है। और वह जीवित और सर्वविद्यमान और सर्वव्यापी और सर्व शक्तिमान है। और वह नहीं चाहता कि इन्सान इस बात से अनजान रहे।

और उसी परमेश्वर के बारे में प्रभु यीशु ने कहा था, कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा!" अर्थात्, उस महान परमेश्वर ने संसार के प्रत्येक व्यक्ति से एक विशेष प्रकार का प्रेम रखा – और उसके विशेष प्रेम का वर्णन इस बात में है कि उसने जगत के प्रत्येक व्यक्ति के लिये अपना एकलौता पुत्र दे दिया! और वह परमेश्वर का एकलौता पुत्र और कोई नहीं पर स्वयं उसी का वह सामर्थी वचन था जिसके द्वारा सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर ने की थी। वही वचन, बाइबल में लिखा है, परमेश्वर की सामर्थ से एक इन्सान बनकर ज़मीन पर आ गया था। और वह यीशु मसीह था। यीशु – अर्थात् "उद्धार करनेवाला।" और मसीह – अर्थात् "परमेश्वर का भेजा हुआ।" और इसी कारण से उसे परमेश्वर का एकलौता पुत्र कहा गया था। स्वयं प्रभु यीशु ने भी अपने आप

को परमेश्वर का एकलौता पुत्र माना था। और यीशु ने कहा था, कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।" पर यीशु, जो परमेश्वर का एकलौता पुत्र था, परमेश्वर ने उसे जगत के लिये दे दिया था। इसका मतलब क्या है? बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा था, कि उस ने जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये अपने पुत्र को दे दिया था। (1 यूहन्ना 4:10)।

अब, थोड़ी देर के लिये हम यह मान लें, कि यदि परमेश्वर ऐसा न करता? यानि परमेश्वर यदि जगत के पापों का प्रायश्चित करने को अपने पुत्र को न देता, तो आज हमारे पास पाप से छुटकारा पाने का या पाप से मुक्ति पाने का क्या उपाय होता? क्या हम अपना रुपया-पैसा और धन और जायदाद और सब कुछ देकर भी पाप से छुटकारा पाकर अपने आप को स्वर्ग में जाने के योग्य बना लेते? प्रभु यीशु ने ही यह सवाल सब लोगों के सामने रखा था, कि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त कर ले, तो क्या वह अपनी आत्मा को नरक में जाने से बचा सकता है? या कौन सी ऐसी वस्तु है, जिसे मनुष्य देकर अपनी आत्मा को पाप के दन्ड से बचा सकता है? बेशक, मनुष्य अपनी समझ से बहुत से ऐसे काम करता है, जिन्हें करके वह ऐसा सोचता है, कि वह ईश्वर को उनके द्वारा प्रसन्न कर रहा है। सुगन्धित फूलों को मनुष्य उसे अर्पित करता है! मोम बत्तियां और धूप बत्तियां उसके आगे चढ़ाता है! अपनी भेंट और आराधना उसे समर्पित करता है! पर इन में से कौन सी वस्तु मनुष्य के पापों का प्रायश्चित कर सकती है? और इन में से कौन सी वस्तु ऐसी है जिसकी आवश्यकता परमेश्वर को है? जैसे कि पौलुस ने अथेने के लोगों से कहा था, कि जो कुछ भी मनुष्य के पास है, और यहां तक की उसकी श्वास तक, सब कुछ परमेश्वर का ही है! तो फिर मनुष्य अपने पापों का प्रायश्चित करने

के लिये क्या दे सकता है? वास्तव में कुछ नहीं!

और परमेश्वर जानता है, कि मनुष्य अपने पापों का प्रायश्चित स्वयं नहीं कर सकता। पर इस सच्चाई से भी इन्कार नहीं किया जा सकता, कि मनुष्य को अपने पापों से छुटकारा पाने की आवश्यकता है। क्योंकि मनुष्य पाप में है। और पाप के कारण कोई स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता। किन्तु मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि है। वह परमेश्वर का आत्मिक स्वरूप है। परमेश्वर मनुष्य का जीवनदाता है। इसलिये वह किसी भी इन्सान को नरक में जाते हुए नहीं देख सकता। सो इन्सान को इसी उलझन से निकालने के लिये परमेश्वर ने यह अदभुत काम किया है, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया! ताकि वह एक इन्सान के रूप में पृथ्वी पर आकर अपने ही आप को बलिदान करके सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित बन जाए; और यों उसके द्वारा और उसके भीतर प्रत्येक मनुष्य को पाप से छुटकारा पाकर स्वर्ग में प्रवेश करने का अवसर मिल जाए। सो जबकि बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया। तो इसका अभिप्राय इस बात से है, कि मनुष्यों को पाप के कारण नरक में जाने से बचाने कें लिये परमेश्वर ने स्वयं अपने ही पुत्र को मानवता कें पापों के लिए बलिदान कर दिया। और क्योंकि यह काम स्वयं परमेश्वर ने किया है। इसलिये परमेश्वर इस बात को स्वीकार करता है, कि जो कोई भी इन्सान उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाता है, कि वह मेरे ही पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर मारा गया था। तो परमेश्वर उस व्यक्ति के सब पापों को, अपने एकलौते पुत्र के प्रायश्चित रूपी बलिदान के कारण क्षमा कर देता है। प्रभु यीशु ने इसी कारण से कहा था, कि "जो कोई उसमें विश्वास लाए, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।" अर्थात्, पाप के कारण नरक के अनन्त विनाश को न पाए, परन्तु परमेश्वर के

एकलौते पुत्र के बलिदान के कारण स्वर्ग में हमेशा का जीवन पाए।

इस से हमें दो बातें सीखने को मिलती हैं। एक तो यह, कि मनुष्य स्वयं अपने ही कामों से नहीं, परन्तु केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही अपने पापों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। और परमेश्वर ने मनुष्य के प्रति अपने प्रेम के कारण अपने असीम अनुग्रह का प्रदर्शन कर दिया है। और दूसरी बात यह हम सीखते हैं, कि परमेश्वर चाहता है, कि प्रत्येक मनुष्य इस बात को अनुभव करे कि उसे अपने पापों से मुक्ति पाने की आवश्यकता है, और यह कि, यह काम केवल परमेश्वर ही उसके लिये कर सकता है। और अपने आप को नम्र बनाकर मनुष्य परमेश्वर के अनुग्रह को स्वीकार करे; अर्थात् उसके पुत्र मसीह में विश्वास लाए, कि उसने मेरे लिये परमेश्वर के अनुग्रह से क्रूस के ऊपर मृत्यु का स्वाद चखा था।

बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर का पुत्र हमारे पापों के लिये मारा गया था, और गाड़ा गया था, और तीन दिन के बाद वह फिर से जी उठा था। और स्वर्ग में वापस जाने से पहले उसने अपने अनुयायीयों को यह आज्ञा दी थी कि उसके इस सुसमाचार का प्रचार सारी मानवता में किया जाए। और जो उस में विश्वास लाएगा और अपना मन फिराएगा, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेगा, वह उसके बलिदान के कारण अपने पापों से उद्धार पाएगा। (लूका 24:46,47; मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। अर्थात्, एक काम परमेश्वर ने किया है। और, दूसरा काम हमें करना है। परमेश्वर ने जगत के सब लोगों के लिये पाप से मुक्ति पाकर स्वर्ग में प्रवेश करने का एक साधन, एक उपाय प्रदान कर दिया है। और अब यह हम सब इन्सानों पर निर्भर करता है, कि क्या हम परमेश्वर की बात मानकर अपने आप को उसके स्वर्ग में प्रवेश पाने के योग्य बनाना चाहते हैं या नहीं!

बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ठट्ठों मे नहीं उड़ाया जाता, पर मनुष्य जो कुछ बोता है, वही वह काटेगा भी। (गलतियों 6:7)।

बाइबल की मूल शिक्षाएं

इस कार्यक्रम मे हम उन बातों पर विचार करते हैं जिनकी शिक्षा हमें बाइबल में मिलती है। और यह बड़ा ही आवश्यक है कि हर एक इन्सान उन बातों से परिचित हो जिनका वर्णन बाइबल में मिलता है। क्योंकि बाइबल एक ऐसी पुस्तक है जिसके द्वारा परमेश्वर मनुष्य से बात करता है। और प्रत्येक मनुष्य को यह जानने की ज़रूरत है कि परमेश्वर उस से क्या चाहता है। बाइबल में परमेश्वर की बातें हैं; उसकी आवाज़ है; और उसका वचन है। हम अपने कर्त्तव्य को अच्छी तरह से समझते हैं, अर्थात् यह, कि हम ने परमेश्वर के वचन को सुना है, और उसे जाना है, और उसे माना है; और अब यह ज़रूरी है कि हम अन्य सभी लोगों को भी उसके बारे में बताएं। यह ज़रूरी नहीं है कि हर एक इन्सान जो परमेश्वर के वचन को सुनेगा, वह उस पर अवश्य ही विश्वास करेगा और उसे मानेगा। पर यह ज़रूरी है, कि हम उसके बारे में सब को बताएं। और इसलिये एक बार फिर से परमेश्वर के वचन की बातों को लेकर मैं आपके पास आया हूं।

बाइबल में सबसे पहले हम परमेश्वर के बारे में पढ़ते हैं। वह परमेश्वर, जिस ने सारे जगत को, और जो कुछ भी संसार में है, और आकाश में है, उस सब को बनाया है। और उसी परमेश्वर ने इन्सान को भी बनाया है। मनुष्य को, बाइबल कहती है, परमेश्वर ने अपनी समानता और अपने स्वरूप पर बनाया था। अर्थात् आरम्भ में जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया था, तो वह परमेश्वर के ही समान पवित्र था। और मनुष्य परमेश्वर के ही समान

एक आत्मिक प्राणी है। और क्योंकि आत्मा सदा वर्तमान रहती है, इसलिये मनुष्य आत्मिक रूप से हमेशा वर्तमान रहेगा।

परमेश्वर केवल एक है, लेकिन उसी परमेश्वरत्व में परमेश्वर का वचन और परमेश्वर का आत्मा भी शामिल हैं। इसलिये बाइबल में परमेश्वर के वचन को भी परमेश्वर कहा गया है और परमेश्वर के पवित्रात्मा को भी परमेश्वर कहकर सम्बोधित किया गया है। जिस प्रकार से मनुष्य के दो व्यक्तित्व हैं, अर्थात् एक बाहरी और एक अन्दरूनी; यानि एक शारीरिक और दूसरा आत्मिक। ऐसे ही परमेश्वर को भी बाइबल में तीन अलग-अलग व्यक्तित्व में प्रस्तुत किया गया है। यीशु मसीह जो बाइबल का मुख्य विषय है, वास्तव में सदा ही वचन के रूप में परमेश्वर के साथ विद्यमान था। किन्तु, मनुष्य को पाप से मुक्ति देने के लिये और उसे स्वर्ग में रहने के योग्य बनाने के लिये, वह स्वर्ग को छोड़कर एक मनुष्य के रूप में ज़मीन पर आ गया था। और यही कारण है कि क्यों बाइबल में यीशु मसीह को अकसर परमेश्वर का एकलौता पुत्र कहकर सम्बोधित किया गया है। क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छा से, और उसकी सामर्थ से और उसी की मर्ज़ी को पूरा करने के लिये स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया था।

और यदि पाप जगत में नहीं होता तो परमेश्वर को यीशु मसीह के रूप में पृथ्वी पर आने की कोई आवश्यकता नहीं होती। पर पाप क्या है? बाइबल के अनुसार, पाप का अर्थ है परमेश्वर के ठहराए नियमों, अर्थात् उसकी व्यवस्था का उल्लंघन करना। और पृथ्वी पर कोई ऐसा इन्सान नहीं है, और न कभी कोई ऐसा व्यक्ति हुआ है जिसने कभी कोई पाप न किया हो। बाइबल में हम बहुत से नेक और धर्मी लोगों के बारे में पढ़ते हैं, जैसे कि नूह, इब्राहिम, मूसा और दाऊद, पर परमेश्वर के लेखे में उन सब ने भी पाप

किया था। और जैसे पापों की क्षमा पाने की आवश्यकता आज हमें है, ऐसे ही उन्हें भी थी। इसलिये, जब परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह मानवता के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर मारा गया था, तो वह एक ही बार सारे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया गया था। यानि वह उन सब के पापों का प्रायश्चित करने को भी मारा गया था जो आदम से लेकर मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय तक हुए थे। और ऐसे ही, उन सब के लिये भी जो जगत के अन्त तक पृथ्वी पर होंगे।

पर अब, कदाचित आप कहें, कि आज तो, बाइबल के अनुसार, हम अपने पापों से मुक्ति या उद्धार तब पाते हैं, जब हम मसीह में विश्वास लाकर अपने पापों से मन फिराते हैं और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये मसीह की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेते हैं, जैसा कि बाइबल में मरकुस 16:16 में और प्रेरितों 2:38 में लिखा हुआ है। पर जो लोग मसीह को जानते तक भी नहीं थे, तो फिर उनका उद्धार मसीह के क्रूस पर मारे जाने के द्वारा कैसे होगा? बाइबल इस बात को यह कहकर समझाती है, कि वास्तव में जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये मसीह का बलिदान परमेश्वर के लेखे में, उसके होनहार के ज्ञान के अनुसार, जगत की उत्पत्ति से भी पहले हो चुका था, पर हमारे लिये इस अन्तिम युग में वह अब प्रकट हुआ है (1 पतरस 1:18-20; प्रकाशित. 13:18)। अर्थात् परमेश्वर के मन में, उसकी योजना मे, यह काम मनुष्य की उत्पत्ति से पहले ही पूरा हो चुका था। क्योंकि परमेश्वर वह है जो भूत, वर्तमान और भविष्य तीन कालों का ज्ञान रखता है। सो जब परमेश्वर की मनसा से उसका पुत्र मसीह जगत के पापों का प्रायश्चित करने को मारा गया था, तो उसे सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित परमेश्वर ने ठहराया था। सो जिन लोगों ने जिस किसी भी काल में रहकर परमेश्वर की इच्छानुसार चलकर,

अर्थात् उसकी आज्ञाओं को मानकर अपना जीवन व्यतीत किया हो, वे परमेश्वर की आज्ञा मानने के कारण, मसीह के बलिदान के फलस्वरूप, अपने पापों की क्षमा प्राप्त करेंगे। जैसे कि हम नूह के बारे में बाइबल में पढ़ते हैं, कि उस ने परमेश्वर की आज्ञा मानकर एक जहाज़ बनाया था; और इब्राहिम के बारे में पढ़ते हैं, कि वो परमेश्वर की आज्ञा मानकर अपना देश छोड़कर परमेश्वर के मार्ग पर चल पड़ा था – उन्होंने मसीह में विश्वास लाकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा नहीं लिया था, क्योंकि वे तो यीशु मसीह को जानते तक भी नहीं थे क्योंकि वे सब मसीह से सैंकड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी पर हुए थे। पर क्योंकि उन लोगों ने अपने जीवनों में परमेश्वर की आज्ञाओं को माना था; इसलिये वे परमेश्वर की आज्ञा मानने के कारण मसीह के बलिदान के द्वारा उद्धार पाएंगे। ऐसे ही, आज हम भी, जब हम परमेश्वर की उन आज्ञाओं को मानते हैं जिन्हें हमारे लिये बाइबल के नए नियम में लिखा गया है, तो हम जानते हैं कि परमेश्वर की आज्ञाओं को मानकर, मसीह के क्रूस पर बलिदान के द्वारा, हम अपने पापों से मुक्ति पाएंगे।

बाइबल में लिखा है, कि प्रत्येक मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यह है, कि वह परमेश्वर का भय माने और उसकी सब आज्ञाओं का पालन करे। परमेश्वर केवल एक है। और सारी मानवता के लिये उसकी एक ही इच्छा है, जिसे उसने अपने वचन की पुस्तक बाइबल में सब लोगों के लिये प्रकट किया है। बाइबल को हमें ऐसे नहीं समझना चाहिए कि वह किसी एक विशेष धर्म के लोगों की पुस्तक है। पर बाइबल वास्तव में सब लोगों के लिये परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता। उसके लिये हम सब बराबर हैं। वह हम सब को अपनी आशीषें देता है। उसका सूरज सबके लिये चमकता है। उसकी बारिश सब के लिये होती है। और उसका अनाज सबके लिये है। ऐसे ही उसकी

आत्मिक आशीषें भी हैं। उसका एकलौता पुत्र यीशु मसीह, उसके अनुग्रह से सारे जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर लटकाया गया था। और उसने सब लोगों के लिये यह निर्धारित किया है, कि अपने पापों से मुक्ति पाने के लिये हर एक व्यक्ति उसके पुत्र यीशु मसीह में अपने सारे मन से विश्वास लाए; और अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये जल में गाड़े जाकर उसकी आज्ञा अनुसार बपतिस्मा ले। (प्रेरितों 2:38; 8:35-39)।

बाइबल में एक जगह इस प्रकार लिखा हुआ है "क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो .... वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लेकर क्रूस पर चढ़ गया, ताकि हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं।" (1 पतरस 2:21 तथा 24)।

सो मसीह न केवल हमारे पापों का प्रायश्चित ही है, पर वह हमारे जीवनों के लिये हमारा आदर्श भी है। न केवल वह पाप से मुक्त करके हमें धर्मी ही ठहराता है, पर हमें धर्मी बनाए रखने के लिये वह अपने आदर्शों के द्वारा प्रतिदिन हमारी अगुवाई भी करता है।

सो परमेश्वर ने हमारी मुक्ति के लिये कुछ भी बाकी नहीं रख छोड़ा है। अब यह हमारे हाथ में है कि हम अपनी आत्मा को स्वर्ग के लिये बचाना चाहते हैं, या उसे नरक में खोना चाहते हैं। निश्चय ही, हमारा उद्धार केवल परमेश्वर ही करेगा। किन्तु, परमेश्वर हमारा उद्धार केवल तभी करेगा जब हम उसकी बात पर विश्वास करके उसकी हर एक बात को मानेंगे।

जिन बातों से परमेश्वर घृणा करता है

यों तो परमेश्वर प्रत्येक पाप और बुराई से घृणा करता है, किन्तु बाइबल का एक लेखक नीतिवचन की पुस्तक के छः अध्याय कें 16 से 19 पदों में कुछ बातों का वर्णन करके विशेष रूप से यूं कहता है, कि "छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन सात हैं जिन से उसको घृणा है" और फिर वह उन का एक-एक वर्णन करके इस प्रकार कहता है, "अर्थात् घमन्ड से चढ़ी हुई आंखें, और झूठ बोलनेवाली जीभ, और निर्दोष का लोहू बहानेवाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, और बुराई करने को वेग से दौड़नेवाले पांव, और झूठ बोलनेवाला साक्षी, और भाईयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य।"

और अपने आज के पाठ में हम इन्हीं सात बातों के ऊपर एक-एक करके विचार करके देखेंगे, और विशेषकर इस बात पर ध्यान देंगे कि परमेश्वर क्यों इन सबसे घृणा करता है?

सबसे पहले हम देखते हैं, "घमन्ड से चढ़ी हुई आंखें।" घमन्ड एक ऐसी चीज़ है, जो न केवल इन्सान को इन्सान से, पर इन्सान को परमेश्वर से भी दूर कर देता है। बाइबल मे हम बहुत से लोगों के बारे में पढ़ते हैं, जो अपने घमन्ड के कारण ही नाश हुए थे। और उन में से एक को "धनी मूर्ख" के नाम से जाना जाता है। प्रभु यीशु ने उसके बारे में बताकर कहा था, कि वह बड़ा धनवान था। और जब उसके खेतों में बहुत भारी उपज हुई थी, तो वह अपने मन ही मन योजना बनाने लगा था, कि मैं अपनी भूमि पर बड़ी-बड़ी बखारियां बनाऊंगा, और वहां अपना सब धन-सम्पत्ति रखूंगा, और अपने प्राण से कहूंगा, कि हे प्राण अब तेरे पास बहुत

धन-सम्पत्ति रखी है, सो चैन कर और खा-पी और सुख से रह! किन्तु, प्रभु ने कहा, कि उसी रात को परमेश्वर ने उस धनवान से कहा, कि आज रात को तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा, तो फिर यह सब जो तू ने इकट्ठा किया है किसका होगा? उस धनवान को अपने धन-सम्पत्ति पर बड़ा घमन्ड था। और अपने घमन्ड और अभिमान में मनुष्य तो क्या उसे परमेश्वर की भी याद नहीं थी। घमन्ड मनुष्य को स्वार्थी बना देता है। एक घमन्डी व्यक्ति केवल अपने ही बारे में सोचता है। उसे न तो मनुष्य की परवाह होती है और न ही परमेश्वर की। घमन्ड के कारण आज बहुतेरे लोग परमेश्वर में विश्वास नहीं करते; क्योंकि वे कहते हैं कि परमेश्वर कौन है कि हम उस में विश्वास करें? किन्तु परमेश्वर घमन्ड से चढ़ी हुई आंखों से घृणा करता है।

ऐसे ही, परमेश्वर उन लोगों से घृणा करता है, जो झूठ बोलते हैं। झूठ बोलना आज के समाज में एक बड़ी ही आम बात हो गई है। लोग अपने घरों में झूठ बोलते है; स्कूल और कॉलेज में झूठ बोलते हैं। लेकिन जो लोग परमेश्वर से डरते हैं, वे जानते हैं कि परमेश्वर झूठ बोलनेवालों से घृणा करता है, इसलिये वे झूठ नहीं बोलते। बाइबल में लिखा है, कि अब जो मसीह यीशु में है वह एक नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गईं, पर अब सब कुछ नया हो गया। (2 कुरि. 5:17)। जो इन्सान प्रभु यीशु मसीह का अनुयायी बन जाता है, वह झूठ बोलना छोड़कर सच बोलने लगता है। क्योंकि वह सब बुराईयों से मन फिराकर मसीह के पास आता है।

और फिर हम देखते हैं, कि परमेश्वर निर्दोष का लोहू बहाने वाले हाथ से घृणा करता है। अर्थात्, उन लोगों से जो लड़ाई-झगड़ा करते हैं; जो मार-पीट करते हैं; और हत्या करते हैं। और उन से परमेश्वर घृणा करता है, जो अपने मन में अनर्थ कल्पनाएं गढ़ते हैं। कितने ही लोग हैं, जो अपने मन में ऐसी-ऐसी कल्पनाएं गढ़ते रहते हैं कि वे किस तरह से किसी को हानि पहुंचा सकते हैं। वे

अपने मनों में यही सोचते रहते हैं, कि कहां कैसे तोड़-फोड़ की जा सकती है; वहां किस से कैसे बदला लिया जा सकता है; और कहां क्या नुकसान किया जा सकता है। ऐसे ही लोगों का वर्णन करके आगे कहा गया है, कि उनके पांव बुराई करने को बड़ी तेज़ी से दौड़ने के लिये तैयार रहते हैं। और वे झूठी गवाही देने से नहीं चूकते; और लोगों में आपस मे झगड़ा करवाना उन्हें अच्छा लगता है। लेकिन ऐसे-ऐसे काम करनेवालों से परमेश्वर घृणा करता है।

प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि, धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे। धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे। धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। (मत्ती 5:3-10)।

परमेश्वर मनुष्य से घृणा नहीं करता। किन्तु वह उन सब बुरे कामों से घृणा करता है जिन्हें मनुष्य करता है।क्योंकि परमेश्वर ने इन्सान को पाप और बुराई करने के लिये नहीं बनाया था। पर उसने आरम्भ में मनुष्य को अपने ही समान पवित्र और खरा बनाया था। पर आज जब परमेश्वर अपने ही बनाए हुए इन्सान को पाप और बुराई करते देखता है, तो उसे न केवल घृणा आती है, पर उसे बड़ा दुख भी होता है। और यह स्वाभाविक ही है, क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया है, मनुष्य परमेश्वर की संतान है। कौन माता-पिता अपने बच्चों के बुरे चाल-चलन से दुखी नहीं होते? और क्या वे नहीं चाहते कि वे अपने बुराई के मार्ग को छोड़कर सही रास्ते पर आ जाएं? ऐसे ही, परमेश्वर भी है। जब भी हम कोई बुराई करते हैं, गलत काम करते हैं तो उसे दुख होता है;

पर जब हम अपना मन फिराकर उसके पास वापस आ जाते हैं तो उसे इस बात से प्रसन्नता होती है।

प्रभु यीशु ने इसी बात को समझाने के लिये एक बार शिक्षा देकर इस प्रकार कहा था, कि किसी व्यक्ति के दो पुत्र थे, और उन में से एक अपने पिता को छोड़कर किसी दूर देश में जाकर रहने लगा था। वहां उस ने अपना सब कुछ, जो वह अपने पिता के घर से अपने साथ लाया था, बुरे कामों में उड़ा दिया। और कुछ ही दिनों में वह कंगाल हो गया। उसके सब दोस्त भी उसे छोड़कर चले गए। और वह एक बड़ा ही गन्दा और पशु सरीखा जीवन व्यतीत करने लगा। पर जब वह अपने आपे में आया, तो वह अपने पिता और अपने घर के बारे में सोचने लगा। वह सोचने लगा, कि उसका पिता और उसका घर कितना अच्छा है; और उसके घर में उसके नौकर भी ऐश-ओ-आराम से रहते हैं। उसे अपनी करनी पर बड़ा पछतावा आया। और वह मन-ही-मन कहने लगा कि "मैंने अपने पिता की बात न मानकर बड़ी ही भारी गलती की है।" सो उसने उसी समय निश्चय किया, कि मै अब इस गन्दे जीवन को छोड़कर अपने पिता के पास वापस जाऊंगा। और अपने पिता से अपनी सब गलतियों के लिये माफ़ी मांगूंगा; और अपने पिता से निवेदन करके कहूंगा, कि मुझे अपने घर में एक नौकर की ही तरह रख ले। सो वह उसी समय अपने घर वापस जाने के लिये चल पड़ा। पर अभी जब वह दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे वापस आते देख लिया, सो उसने दौड़कर अपने पुत्र को अपने गले से लगा लिया और उसे बहुत-चूमा, और अपने नौकरों से कहा कि घर में एक बहुत बड़ा जश्न मनाने की तैयारी करो, अच्छे से अच्छा खाना बनाओ, घर को अच्छी तरह से सजाओ और सब को बुलाओ ताकि हम सब मिलकर खुशी मनाएं, क्योंकि मेरा खोया हुआ पुत्र वापस आ गया है। और प्रभु यीशु ने कहा, ऐसे ही स्वर्ग में भी परमेश्वर और उसके सब दूत मिलकर खुशी मनाते

हैं, जब कोई भी मनुष्य बुराई से अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास वापस आता है।

मनुष्य की आत्मा का मूल्य वास्तव में केवल परमेश्वर ही जानता है। इसलिये, प्रभु यीशु ने कहा था, कि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त कर ले पर अन्त में अपनी आत्मा को खो दे तो उसे क्या लाभ होगा? केवल पाप मनुष्य की आत्मा को नरक मे ले जाता है। लेकिन परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो पर स्वर्ग में अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर हमें हमारे पापों के दन्ड से बचाना चाहता है। पाप का दन्ड है मृत्यु, हमेशा की मृत्यु; अर्थात् हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग होकर नरक में रहना। इसलिये परमेश्वर ने जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये एक ऐसा विशाल बलिदान दिया है। ताकि उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाकर, और हर एक बुराई से अपना मन फिराकर और जल मे अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर, प्रत्येक जन अपने पाप के दन्ड से बच जाए, और स्वर्ग में हमेशा का जीवन पाने के लिये तैयार हो जाए।

आज पृथ्वी पर हर एक इन्सान के लिये यह ज़रूरी हो गया है, कि वह उस खोए हुए पुत्र की तरह अपने आपे में आए, और प्रत्येक बुराई से अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास वापस लौट आए। बाइबल में लिखा है, कि सबने पाप किया है और सब परमेश्वर से दूर हैं (रोमियों 3:23; यशायाह 59:1, 2)। इसलिये सब को अपना मन फिराकर परमेश्वर के पास आने की आवश्यकता है। और सब को अपने पापों से उद्धार पाने के लिये परमेश्वर की आज्ञा को मानने की आवश्यकता है।

और मेरी आशा है, कि आप इस बात पर अवश्य ही ध्यान देंगे।

अपने कामों से नहीं, पर आज्ञा मानने के द्वारा

बाइबल के नए नियम में यूहन्ना नामक पुस्तक के नौवें अध्याय में हम एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं जो अपने जन्म से ही अन्धा था। लिखा है, कि जब यीशु और उसके चेले यहूदियों के मंदिर मे से निकलकर जा रहे थे, तो मार्ग में उन्होंने एक अन्धे को देखा, जो मन्दिर के बाहर बैठकर भीख मांगा करता था। प्रभु यीशु के चेलों ने यीशु से पूछा, कि वह अन्धा क्यों जन्मा है? क्या इसने या इसके माता-पिता ने कोई पाप किया था? प्रभु ने उन्हें जवाब देकर कहा था कि वह अन्धा इसलिये नहीं जन्मा कि किसी ने कोई पाप किया था। फिर प्रभु ने भूमि पर थूका और मिट्टी सानी और मिट्टी को उस अंधे की आंखों पर लगाकर उस से कहा, कि पास में ही बने शीलोह के कुन्ड में जाकर धो ले। और लिखा है, कि वह व्यक्ति उठकर गया और जाकर उसने अपनी आंखों को धोया, और वह तुरन्त देखने लगा। इसमें कोई संदेह नहीं, और आप कल्पना करके सोच सकते हैं, कि उस मनुष्य के आनन्द का ठिकाना नहीं रहा होगा। वह जन्म ही से अन्धा था, पर अब वह देख रहा था। इस से पहले लोगों ने उसे बताया होगा कि वह वस्तु ऐसी लगती है, और यह चीज़ वैसी लगती है। पर अब वह प्रत्येक वस्तु को स्वयं अपनी ही आंखों से देख सकता था। पहले वह अन्धकार में था, पर अब वह सब कुछ देख रहा था!

पर एक खास बात जो इस घटना से हमें सीखने को मिलती है, वह यह है, कि जब प्रभु ने उस अंधे को ठीक किया था, अर्थात् उसे चंगाई दी थी, तो प्रभु ने उस से कहा था, कि जाकर अपनी

आंखों को धो ले। और इससे भी पहले, प्रभु ने भूमि पर थूककर उससे मिट्टी सानी थी और उस मिट्टी को प्रभु ने उसकी आंखों पर लगाया था। अब हम सब यह जानते हैं, और हम यह मानते हैं, कि प्रभु ने जब उस अन्धे को देखा था, तो प्रभु बिना कुछ किये भी चंगा कर सकता था। यानि यदि यीशु कहता, कि तू चंगा हो जा तो वह तत्काल चंगा हो जाता। क्योंकि न तो उस मिट्टी में कोई ताकत थी जिसे प्रभु ने उसकी आंखों पर लगाया था। और न ही शीलोह के कुन्ड के उस पानी में कोई ऐसी सामर्थ थी, जिस से प्रभु ने उसे आंखें धोने को कहा था। तो फिर प्रभु ने ऐसा क्यों किया? क्यों उसने थूककर मिट्टी सानी और उसकी आंखों पर लगाकर उसे आंखें धोने की आज्ञा दी? इसका केवल एक ही कारण था। और वह कारण यह था, कि प्रभु इसके द्वारा अपने चेलों को जो उस समय प्रभु के साथ थे, और उस अन्धे व्यक्ति को यह सिखाना चाहता था, कि परमेश्वर का वरदान मनुष्य को केवल तब ही मिलता है जब मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा को मानता है। क्योंकि जब मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा को मानता है, चाहे वह आज्ञा मनुष्य को मूर्खतापूर्ण ही क्यों न लगे, तो उस आज्ञा को मानने के द्वारा मनुष्य यह व्यक्त करता है कि वह वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास रखता है। इसलिये प्रभु यीशु ने एक बार लोगों को कहा था कि जब तुम मेरा कहना ही नहीं मानते तो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु क्यों कहते हो? (मरकुस 6:46)।

इस बात के बाइबल मे हम को अनेकों उदाहरण मिलते हैं, कि जब-जब लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा को माना था, तो परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी थी। और जब भी किसी ने परमेश्वर की आज्ञा को तुच्छ जानकर उसे नहीं माना था, तो परमेश्वर ने अपनी अप्रसन्नता को उस पर व्यक्त किया था। इस पाठ में कुछ ऐसे ही उदाहरणों को आज मैं बाइबल में से आपके सामने रखने जा

रहा हूं।

सबसे पहले, बाइबल में पहले शमूएल की पुस्तक के 15 अध्याय में हम एक राजा के बारे में पढ़ते हैं, जिसका नाम शाऊल था। शाऊल को परमेश्वर ने अपनी प्रजा इसराएल के ऊपर राजा नियुक्त किया था। पर जब परमेश्वर ने शाऊल को उसकी सेना के साथ अमालेक में भेजा था, कि शाऊल वहां जाकर परमेश्वर से बैर रखनेवाले अमालेकियों को और उनकी प्रत्येक वस्तु को नाश कर दे। तो शाऊल ने परमेश्वर की आज्ञा को पूरी तरह से नहीं माना था। उस ने जाकर अमालेक और अमालेकियों को नाश तो किया था। पर जो कुछ वहां उसे अच्छा लगा था, उन सब को वह अपने साथ ले आया था। और हम पढ़ते हैं, कि परमेश्वर शाऊल के आज्ञा न मानने के कारण उस से बड़ा ही अप्रसन्न हुआ था, और यहां तक की परमेश्वर ने शाऊल से राज्य करने का अधिकार भी छीन लिया था।

ऐसे ही, बाइबल में उत्पत्ति की पुस्तक के 22 अध्याय में हम इब्राहीम के बारे में पढ़ते हैं। इब्राहीम आरम्भ मे निसंतान था। पर जब वह बूढ़ा हो गया था, तो परमेश्वर की आशीष से उसके घर में एक पुत्र का जन्म हुआ था। लेकिन जब वह लड़का जवान हो रहा था, तभी परमेश्वर ने एक दिन इब्राहीम से कहा था, कि तू अपने पुत्र को एक पहाड़ पर ले जाकर मेरे लिये बलिदान कर दे! हम कल्पना करके सोच सकते हैं, कि यह सुनकर इब्राहिम का क्या हाल हुआ होगा। पर तौभी लिखा है, कि भोर होते ही इब्राहिम उठ खड़ा हुआ। उसने अपने पुत्र को भी उठाया। और अपने गदहे पर काठी बान्धी और लकड़ी और छुरी आदि लेकर वह उस पहाड़ की ओर चल पड़ा जिस पर परमेश्वर ने उसे अपने पुत्र को बलि करने को कहा था। तीन दिन की यात्रा के बाद जब वे उस स्थान पर पहुंचे, और इब्राहीम ने सारी तैयारी करके जैसे ही छुरी हाथ

में लेकर अपने पुत्र को परमेश्वर की आज्ञानुसार बलि करना चाहा; तभी परमेश्वर ने उसे यह कहकर रोका कि हे इब्राहीम तू अपने पुत्र को कोई हानि मत पहुंचा, क्योंकि तू ने जो अपने एकलौते पुत्र को भी मेरे लिये नहीं छोड़ा, इस से अब मैं जान गया हूं कि तू सचमुच में परमेश्वर से प्रेम करता है।

वास्तव में, सम्पूर्ण बाइबल में, आरम्भ से लेकर अंत तक, इस बात को हम बार-बार देखते हैं, कि परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य से केवल यही चाहता है कि मनुष्य उसकी आज्ञा माने। क्योंकि आज्ञा मानने के द्वारा मनुष्य यह व्यक्त करता है, कि वह वास्तव में परमेश्वर पर विश्वास करता है। किन्तु हम यह भी देखते हैं बाइबल से, कि परमेश्वर की आज्ञाएं बड़ी ही साधारण होती हैं, और ऐसी प्रतीत होती हैं जैसे कि कोई मूर्खता की सी बात हो। और यही कारण है कि क्यों मनुष्य अकसर परमेश्वर की आज्ञा को नहीं मानता।

इस बात का एक बड़ा ही अच्छा उदाहरण हमें नामान की घटना में मिलता है। नामान के बारे में बाइबल में दूसरे राजा की पुस्तक के पांचवे अध्याय में हम पढ़ते हैं कि नामान के शरीर पर कोढ़ के से दाग थे। वह चंगा होना चाहता था। पर सब कुछ करने के बाद भी उसे कोई लाभ नहीं हो रहा था। कि तभी उसे पता चला, कि यदि वह परमेश्वर के एक जन के पास जाएगा, तो वह परमेश्वर की ओर से उसे यह बता सकता है कि नामान को कोढ़ से शुद्ध होने के लिये क्या करना चाहिए। सो नामान अपने नौकर-चाकरों के साथ बहुत सी दान की वस्तुएं लेकर परमेश्वर के उस जन से मिलने को चला गया। परन्तु जब नामान परमेश्वर के जन के द्वार पर पहुंचा तो उस ने भीतर से ही किसी के द्वारा नामान को यह कहला भेजा कि तू जाकर यरदन नदी में सात बार डुबकी लगा ले और तू चंगा हो जाएगा। लिखा है, कि यह सुनते

ही नामान तो आग-बबूला हो गया। उसने कहा, कि मैंने तो यह सोचा था कि वह बाहर आकर मेरे लिये प्रार्थना करेगा, और मुझे चंगा करने के लिये कुछ करेगा। लेकिन उसने तो मुझ से कहा है, कि जाकर यरदन नदी में सात बार डुबकी लगा ले तो तू चंगा हो जाएगा। सो नामान जैसा आया था वहां से वैसा ही चला गया। लेकिन मार्ग में उसने अपना मन फिराया। और वह लौटकर यरदन नदी के पास आया, और जैसा उस से कहा गया था, उसने नदी में सात बार डुबकी लगाई। और जब उसने ऐसा किया तो परमेश्वर के वचनानुसार वह तुरन्त चंगा हो गया।

इस से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें परमेश्वर की आज्ञाओं को तुच्छ नहीं समझना चाहिए। पर जो वह कहता है, उसे वैसे ही मानना चाहिए। आज परमेश्वर किसी भी मनुष्य के द्वारा हम से बातें नहीं करता है। क्योंकि आज उसकी सभी आज्ञाएं संसार के सब लोगों के लिये, उसकी पुस्तक बाइबल में लिखी हुई हैं। और परमेश्वर आज हर इन्सान से हर जगह यह चाहता है कि सब लोग उसके इस सुसमाचार पर विश्वास करें, कि उसका एकलौता पुत्र यीशु मसीह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को मारा गया था। और उसमें विश्वास लाकर अपना मन फिराएं, और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये जल में गाड़े जाकर बपतिस्मा लें।

जिस प्रकार से नामान को परमेश्वर की आज्ञा मानने पर ही शारीरिक चंगाई मिली थी। वैसे ही यदि हम भी आज आत्मिक चंगाई अर्थात् पाप से मुक्ति पाना चाहते हैं, तो परमेश्वर की आज्ञा मानने से ही ऐसा हो सकता है। क्या आप परमेश्वर की आज्ञा मानकर अपने पापों से छुटकारा पाना चाहते हैं? इस बारे में यदि आप और अधिक जानना चाहते हैं, तो हमें अवश्य लिखकर बताएं।

जीवन की कुछ महत्वपूर्ण सच्चाईयां

मित्रो जब हम आत्मिक बातों पर ध्यान करते हैं, तो हम परमेश्वर पर ध्यान करते हैं। क्योंकि आत्मा का संबंध परमेश्वर से है। परमेश्वर, वास्तव में, आत्मा है, इसलिये हम उसे परम-आत्मा कहकर सम्बोधित करते हैं। हम में से हर एक जन परमेश्वर के आत्मिक स्वरूप पर बना एक आत्मिक प्राणी है। इसलिये हम सब एक ही परमेश्वर के सन्तान हैं। हम सब का एक ही आत्मिक पिता है। और जब हम अपने आप को इस दृष्टिकोण से देखते हैं, तो हम स्वयं को वास्तव में बड़ा ही आशीषित अनुभव करते हैं – अर्थात् यह जानकर कि परम-प्रधान परमेश्वर हमारा पिता है। उसी ने हम को जीवन दिया है, और पृथ्वी पर हमें भांति-भांति की आशीषों से परिपूर्ण किया है। स्वयं हमारा जीवन परमेश्वर की एक महान आशीष है। प्रत्येक सुबह और हर एक दिन परमेश्वर की आशीष है। तरह-तरह की भोजन वस्तुएं, पानी, और बदलते मौसम, ये सब वस्तुएं परमेश्वर की ही दी हुई आशीषें हैं। परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता। वह किसी को गरीब और किसी को अमीर पैदा नहीं करता। वह किसी को अपाहिज या किसी को तन्दरूस्त पैदा नहीं करता। उसके निकट सब मनुष्य एक समान हैं। जिस परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया है, उसी ईश्वर ने पृथ्वी पर सब तरह के पशु-पक्षी और पेड़ पौधों को भी बनाया है – और उन्हें सक्षम किया है, कि वे अपनी ही तरह अन्य औरों को भी उत्पन्न कर सकते हैं। सो वे जहां भी हैं और जिस भी परिस्थित में हैं, वे अपनी क्षमता अनुसार अपने ही प्रतिरूप पर औरों को उत्पन्न करते हैं।

अब जब हम विशेष रूप से मनुष्य पर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि कुछ विशेष बातें ऐसी हैं जो सभी मनुष्यों के लिये एक

समान हैं। और इन बातों में सबसे पहली बात हम यह देखते हैं, कि हर एक इन्सान जो पैदा हुआ है, वह एक दिन अवश्य मरेगा भी। चाहे कोई किसी भी परिस्थित में क्यों न हो; अर्थात् गरीब हो या अमीर हो; तन्दरूस्त हो या बीमार हो; एक न एक दिन सभी का अन्त होगा। और हम में से कोई भी यह नहीं जानता कि हमारा अन्त कब होगा। यानि हम सब का जीवन पृथ्वी पर अनिश्चित है।

पर हम सब के सब आत्मिक प्राणी हैं। अर्थात् हमारा आत्मिक स्वरूप अमर है। परमेश्वर आत्मा है, और इसलिये वह सदा ही वर्तमान रहेगा। और ऐसे ही, प्रत्येक मनुष्य भी आत्मिक रूप से हमेशा बना रहेगा। आप की आत्मा आपका एक ऐसा अस्तित्व है जिसको कोई मिटा नहीं सकता। कभी-कभी लोग जीवन से तंग आकर "आत्म-हत्या" कर लेते हैं। वास्तव में वे अपने शरीर की या अपनी देह की हत्या करते हैं। क्योंकि आत्मा की हत्या तो कोई कर ही नहीं सकता। क्योंकि आत्मा एक ऐसी चीज है जो अमर है। जिसका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं हो सकता। क्योंकि आत्मा परमेश्वर का स्वरूप है – जिस स्वरूप पर हम सब बनाए गए हैं। और जिस प्रकार परमेश्वर हमेशा रहेगा, उसी तरह से हम सब भी जो पृथ्वी पर जन्मे हैं, हमेशा बने रहेंगे।

पर हम सब में एक और समानता है, और वह यह है कि हम सब पापी हैं। हम मे से हर एक ने पाप किया है। जब से हम ने होश सम्भाला है; यानि जब से हम बचपन के दायरे से निकलकर समझदार हुए हैं, तब से लेकर आज तक हम सब ने अनेकों पाप किए हैं। और स्वयं हमारा विवेक भी हमें दोषी ठहराता है, कि हम पापी हैं। और परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल में भी लिखा है, कि सब मनुष्यों ने पाप किया है, और इसलिये सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों 3:23)। परमेश्वर की महिमा से रहित होने का अभिप्राय इस बात से है, कि अपने पाप के कारण हर एक इन्सान परमेश्वर से अलग है। और परमेश्वर से अलग होकर रहना ठीक ऐसा ही है, जैसा मछली का जल के बाहर रहना, और शरीर का प्राण के बिना रहना। जो कि असम्भव है। क्योंकि मछली जल के बिना मर जाएगी; और ऐसे ही शरीर भी प्राण के बिना मर जाता है। सो मनुष्य का परमेश्वर से अलग

होकर रहना, एक मरी हुई दशा मे रहने के समान है।

इसलिये, हम सभी मनुष्यों को अपने पापों से छुटकारा पाने की आवश्यकता है। हम सब इन्सानों को अपने पापों से मुक्ति और उद्धार प्राप्त करने की आवश्यकता है। और यह काम हम सब के लिये केवल परमेश्वर ही कर सकता है। केवल परमेश्वर ही हमें पापों से छुटकारा दिला सकता है। केवल परमेश्वर ही हमें पाप से मुक्त कर सकता है, और केवल वही पाप से हमारा उद्धार कर सकता है। और यह एक ऐसी खास बात है जिसे हम सब को समझने की बड़ी ही आवश्यकता है। क्योंकि अकसर हम सब इन्सान ऐसा सोचते हैं, कि हम अपनी तरफ से कुछ करके या अपनी ओर से कुछ परमेश्वर को देकर उसे प्रसन्न कर सकते हैं, और बदले में वह हमारे अपराधों को क्षमा कर देगा। पर वास्तविकता ऐसी नहीं है। क्योंकि हमारे पास हमारा अपना क्या है, जिसे हम परमेश्वर को दे सकते हैं? क्या वास्वत में सब कुछ परमेश्वर का ही नहीं है? और क्या हम ऐसा कुछ कर सकते हैं, कि हम अपने कामों से अपने पापों पर परदा डाल लें या उन्हें ऐसा छिपा लें, कि हमारी बुराईयां परमेश्वर को दिखाई ही न दें?

वास्तव में, कोई भी इन्सान स्वयं अपने कामों से, या अपनी इच्छा से कुछ करके या देकर, या अपने परिश्रम से अपने पापों से छुटकारा प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिये हम सभी को परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है। क्योंकि हम अपने-अपने प्रयत्नों से अपने आपको पाप से मुक्ति नहीं दिला सकते। केवल परमेश्वर ही पाप से हमारा उद्धार करके हमें पाप के दन्ड से मुक्त कर सकता है। लेकिन परमेश्वर अलग-अलग ढंग से या अलग-अलग रीतियों और उपायों से मनुष्य को पाप से मुक्ति नहीं देता। पर उसने सभी इन्सानों के लिये पाप से मुक्ति पाने का एक साधन बनाया है। परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धार्मिक यीशु मसीह; और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है: और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी। (1 यूहन्ना 2:1, 2)। यीशु मसीह को बाइबल में परमेश्वर का पुत्र कहकर सम्बोधित किया गया है। पर वास्तव में वह स्वयं

ही परमेश्वरत्व में एक व्यक्तित्व है। जिसने अपनी ही इच्छा से परमेश्वरत्व को स्वर्ग मे छोड़कर पृथ्वी पर आकर मनुष्यत्व के कपड़े पहन लेने का निश्यच किया था। क्योंकि वह मनुष्य का पाप से उद्धार करना चाहता था। सो वह ईश्वर होकर भी एक इन्सान बन गया था। पर वह पृथ्वी पर एक बड़ा विशाल कार्य करने को आया था। वह अपने आप को बलिदान करके सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को आया था। इसलिये बाइबल में लिखा है, कि वह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। बाइबल में लिखा है, कि उस में कोई पाप नहीं था, पर तौभी वह एक अपराधी की तरह सारे जगत के पापों के लिये क्रूस पर लटकाकर मारा गया था। और इस प्रकार परमेश्वर ने यीशु मसीह को सारे जगत के पापों का छुटकारा नियुक्त किया है। अर्थात्, यीशु मसीह के भीतर हर एक इन्सान अपने पापों से छुट्कारा पाकर पाप से मुक्त हो सकता है। और पाप से छुटकारा पाकर फिर से परमेश्वर के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकता है। और इस पृथ्वी पर इस आशा के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकता है, कि एक दिन जब वह यहां से हमेशा के लिये जाएगा, तो उसे परमेश्वर के स्वर्ग में रहने का एक स्थान मिलेगा। क्योंकि इस जगत से वह एक पापी की तरह नहीं पर एक धर्मी की तरह जाएगा। क्योंकि यीशु मसीह उसके पापों का प्रायश्चित है!

इसलिये यह बड़ा ही आवश्यक है, कि हर एक इन्सान इस बात पर ज़रूर ध्यान दे, कि वह अपने सारे मन से यीशु मसीह में विश्वास लाए, और अपनी प्रत्येक बुराई से अपना मन फेरकर अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह की आज्ञा मानकर जल में बपतिस्मा ले। (यूहन्ना 3:16; मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; प्रेरितों 8:35-39)।

प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, कि मार्ग, और जीवन और सच्चाई मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। (यूहन्ना 14:6)। यीशु मसीह परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया गया सारी मानवता का एक मुक्तिदाता है। और हम सब को उसके पास आने की आवश्यकता है।

निर्णय करने का समय अभी है

बाइबल के नए नियम में, लूका की पुस्तक के सोलहवें अध्याय में प्रभु यीशु मसीह ने अपने सुननेवालों को एक धनवान व्यक्ति और एक कंगाल व्यक्ति की कहानी सुनाई थी। इस कहानी से प्रभु यीशु ने यह सिखाया था, कि मनुष्य का पृथ्वी पर जीवन ही सब कुछ नहीं है, पर मनुष्य के वास्तविक जीवन का आरम्भ इस जीवन के बाद ही होता है। क्योंकि मनुष्य का आत्मिक और अनन्त जीवन इस पृथ्वी पर के जीवन के बाद ही शुरू होता है। पर उस जीवन में मनुष्य कहां होगा? और किस परिस्थिति में होगा? इस बात का निर्णय मनुष्य स्वयं अपने इस जीवन में ही करता है। प्रभु यीशु ने कहा था कि:

एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहनता था, और प्रतिदिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था। और लाज़र नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ, उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेज़ पर की जूठन से अपना पेट भरे; वरन कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ, कि वह कंगाल एक दिन मर गया और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया। और वह धनवान भी मरा, और गाड़ा गया। और अधोलोक में उस ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाई, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाज़र को देखा। और उसने पुकार कर कहा, कि हे पिता इब्राहीम मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी

अंगुली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला मे तड़प रहा हूं। परन्तु इब्राहीम ने कहा, कि हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन मे अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएं; परन्तु अब वह यहां शांति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़, हमारे और तुम्हारे बीच में एक गड़हा ठहराया गया है, कि जो यहां से तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सके, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। उस ने कहा; तो हे पिता, मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज, क्योंकि मेरे पांच भाई हैं, वह उन के सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं। इब्राहीम ने उस से कहा, कि उन के पास तो मूसा और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उन की सुनें। पर उस ने कहा, नहीं, हे पिता इब्राहीम, पर यदि मरे हुओं में से कोई उन के पास जाए, तो वे मन फिराएंगे। पर उस ने उस से कहा, कि जब वे मूसा और भविष्यवक्ताओं की ही नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी भी उठे तो वे उसकी भी नहीं मानेंगे।

यूं तो इस कहानी से अनेकों शिक्षाएं हमें सीखने को मिलती हैं, जैसे कि इस बात का चुनाव मनुष्य को स्वयं करना है कि वह आनेवाले जीवन में किस स्थान पर जाकर रहना चाहता है। और अधोलोक मे पीड़ाजनक स्थान ऐसा भयानक है, कि कोई भी नहीं चाहेगा कि उसके सगे-सम्बन्धी वहां उसके पास आ जाएं। और यह कि परमेश्वर ने मनुष्य के लिये अपनी इच्छा को अपनी पुस्तक में लिखवाकर दे दिया है, और यदि हम उसकी लिखी हुई पुस्तक की बातों पर कोई ध्यान नहीं देते, तो परमेश्वर और किसी तरह से अपनी इच्छा को मनुष्य पर प्रकट नहीं करेगा। लेकिन, जो एक विशेष बात प्रभु यीशु ने इस कहानी से सिखाई थी, वह यह है,

कि पृथ्वी के इस जीवन के समाप्त हो जाने पर मनुष्य की परिस्थिति तुरन्त क्षण भर में बदल जाती है। क्योंकि वह जो राजाओं की तरह बड़े सुख-विलास और धूम-धाम के साथ इस ज़मीन पर रहता था; जब वह अपना सब कुछ छोड़कर इस पृथ्वी पर से उठाया गया था, तो क्षण भर में ही उसने अपने आप को ऐसी जगह पर पाया था, जिस की वह कल्पना भी नहीं कर सकता था – और वह किसी भी तरह से वहां पर अपना छुटकारा भी नहीं करवा सकता था। पृथ्वी पर उसके पास ताकत थी; अधिकार था; वह जो चाहता था हो जाता था। पर अब वह कुछ नहीं कर सकता था। सिवाए इसके कि उसे बड़ा पछतावा आ रहा था, कि काश उसका ध्यान परमेश्वर और उसके वचन की बातों पर गया होता! पर अब वह कुछ नहीं कर सकता था! दूसरी ओर, वह कंगाल भी अपनी मृत्यु के पश्चात एक ऐसी जगह क्षण भर में पहुंच गया था, जो उस की कल्पनाओं से भी दूर थी। अब ऐसा नहीं है, कि प्रत्येक धनवान केवल इसलिये नरक में जाएगा, क्योंकि वह धनवान है। और न ही यह सच है, कि हर एक कंगाल इसलिये स्वर्ग में जाएगा, क्योंकि वह एक कंगाल है। पर जिस बात को प्रभु ने इस कहानी में विशेष रूप से दर्शाया है, वह यह है, कि पृथ्वी पर का यह जीवन प्रत्येक मनुष्य के लिये अनिश्चित है। पर इस जीवन के बाद एक अनन्त जीवन हर एक इन्सान के लिये निश्चित है। और वह अनन्त जीवन इस पृथ्वी पर के जीवन के बिल्कुल विपरीत हो सकता है। इसलिये कोई इन्सान इस धोखे में न रहे कि यदि आज वह बड़े सुख विलास के साथ रह रहा है, और पृथ्वी पर उसके पास ताकत है, और अधिकार है और ऊंचा पद है, और मान-सम्मान है, तो इस जीवन की समाप्ति पर भी वह ऐसे ही सुख-विलास के साथ रहेगा। पर वास्तव में, सच्चाई यह है कि, पलक झपकते ही, इस जीवन के बाद एक धनवान एक

कंगाल से भी बदतर हो सकता है, और एक कंगाल धनवान से भी अधिक सुखी हो सकता है। वास्तव में जो मनुष्य केवल अपने शारीरिक सुख की ही चिन्ता करता है पर अपनी आत्मा की सुरक्षा और सुख की तरफ कोई ध्यान नहीं देता है, उसकी तुलना प्रभु यीशु ने बाइबल में लूका की पुस्तक के बारह अध्याय में एक और कहानी में करके कहा था कि वह एक ऐसा व्यक्ति है, जैसा कि एक मूर्ख धनवान था। जो अपने खेतों की भारी उपज और अपने अपार धन को देखकर फूला नहीं समा रहा था। और अपने प्राण से कह रहा था, कि हे प्राण तेरे पास अब सब कुछ है, सो खा-पी और सुख के साथ रह, अब तुझे कोई चिन्ता नहीं। पर उसी रात को परमेश्वर ने उस धनवान से कहा, कि आज ही रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा, सो अब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है वह सब किसका होगा? और प्रभु यीशु ने कहा था, कि ऐसे ही प्रत्येक वह जन भी है जो पृथ्वी पर अपने लिये सब कुछ बटोरकर अपने आप को धनी और सुखी समझता है, पर वास्तव में परमेश्वर की दृष्टि में वह धनी और सुखी नहीं है, पर एक कंगाल है! क्योंकि उसने केवल अपने शरीर के लिये ही सब कुछ बटोरा है, जो कि नाशमान है। पर अपनी अमर और अविनाश आत्मा के लिये उसने कुछ भी तैयारी नहीं की है; कुछ भी नहीं प्राप्त किया है।

और क्या यह वास्तव में सच नहीं है, कि लगभग सभी लोग अपनी आत्मा की सुरक्षा और भविष्य की ओर कोई ध्यान नहीं देते? सभी को केवल अपने शरीरों की ही चिन्ता है। किन्तु परमेश्वर को मनुष्य की आत्मा की चिन्ता है। क्योंकि वह जानता है कि मनुष्य का शरीर तो नाशमान है, पर उसकी आत्मा अविनाश और अमर है। इसलिये परमेश्वर मनुष्य की आत्मा को नरक के अनन्त विनाश से बचाना चाहता है। वह मनुष्य को स्वर्ग मे प्रवेश करने के योग्य बनाना चाहता है। और स्वर्ग में प्रवेश करने से इंसान को

केवल एक ही वस्तु रोकती है। और वह वस्तु है पाप। और परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य के पापों का प्रायश्चित करके, अपने पुत्र यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा, हर एक इन्सान को पाप से छुटकारा पाने का साधन दे दिया है। जिसमें विश्वास लाकर कोई भी व्यक्ति आज अपने पापों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। बाइबल में लिखा है, कि जो व्यक्ति यीशु मसीह में अपने पूरे मन से विश्वास लाएगा, और सब बुराई से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से जल में बपतिस्मा लेगा तो वह अपने पापों से उद्धार पाएगा। यह प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की है प्रत्येक मनुष्य से। और परमेश्वर न तो झूठ बोलता है और न पक्षपात करता है। पर जो परमेश्वर ने मनुष्य के उद्धार के लिये करना था, वह उसने कर दिया है। अब मनुष्य को चाहिए कि वह अपनी आत्मा को स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बनाने की ओर ध्यान दे। परमेश्वर की बात सुने, और उसकी बात पर विश्वास करके उसकी आज्ञा को माने।

क्योंकि मनुष्य का जीवन इस पृथ्वी पर अनिश्चित है। और यदि मनुष्य अपने इसी जीवन में परमेश्वर की बात को मानकर अपने उद्धार को निश्चित नहीं करेगा, तो वह अपनी आत्मा को नरक में हमेशा के लिये खो देगा। और प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि यदि मनुष्य सारे जगत को भी प्राप्त करके अपनी आत्मा को अन्त में खो दे, तो उसे क्या लाभ होगा?